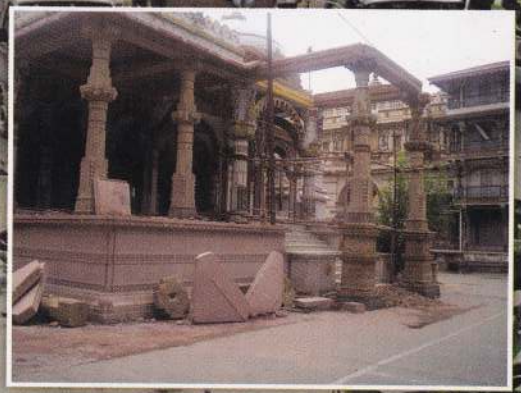
Rs. 5/-

શ્રી સ્વામિનારાયણ

July' 2008

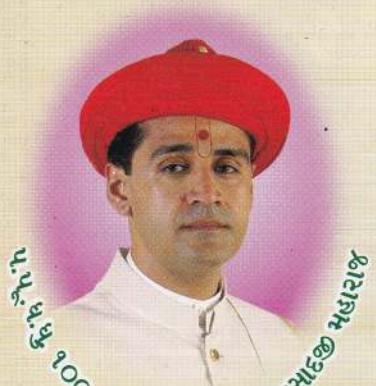




શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર (નિજ મંદિર)
અમદાવાદમાં ચાલતું જીર્ણોદ્ધારનું કામ.

પ્રકાશક : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧. • Publisher : Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1.

॥ શ્રીહરિ ॥



ગુરુપૂર્ણિમા પર્વ

અમદાવાદ મંદિરમાં ગુરુપૂર્ણિમાના પર્વ પ્રસંગે ગુરુપૂજન મહોત્સવ

નિમંત્રણ

અષાઢ શુક્લ પૂર્ણિમા એટલે ગુરુપૂર્ણિમા જેને વ્યાસ પૂર્ણિમા તરીકે પણ કહેવામાં આવે છે. ગુરુપૂર્ણિમાને શુભ દિવસે ગુરુભક્તિ નિવેદન કરવાનો ઉત્તમ શ્રેષ્ઠ પર્વ, આજના દિવસે સ્વયં પરમાત્મા ગુરુ દ્વારા ભક્તની ભક્તિ સ્વીકારે છે. અને ગુરુઋણ અદા કરવાનો ઉત્તમ દિવસ. ગુરુપૂર્ણિમાનું ગુરુપૂજન વૈદિક પરંપરામાં ગુરુપૂજન કર્યા વિના શિષ્ય ઋણમાંથી મુક્ત થઈ શકતો નથી. તેથી આ દિવસે ગુરુમંત્ર-મંત્રદીક્ષા લેવાનો ઉત્તમ સમય ગણાયછે.

આપણા સંપ્રદાયમાં ઈષ્ટદેવ શ્રીહરિએ સ્વહસ્તે લખેલ શિક્ષાપત્રી શ્લોક ૧૨૮ માં પોતાના આશ્રિત ત્યાગી અને ગૃહસ્થના ગુરુપદે ધર્મવંશી આચાર્યને નિયુક્ત કર્યા છે. શિક્ષાપત્રીની આજ્ઞા મુજબ ધર્મવંશી આચાર્ય થકી મંત્રદીક્ષા લીધી હોય ન હોય તે શ્રીહરિનો આશ્રિત ગણાય નહીં. માટે આગામી અષાઢ સુદ ૧૫ પૂર્ણિમા ગુરુપૂર્ણિમા તા. ૧૮-૭-૨૦૦૮ શુક્રવારના શુભ મંગળ દિવસે સર્વાવતારી શ્રી નરનારાયણ દેવના શુભ સાનિધ્યમાં શ્રીહરિએ સ્વહસ્તે પોતાના સ્થાને પ્રસ્થાપિત કરેલ શ્રી નરનારાયણદેવ ની ગાદીના આચાર્ય પ.પૂ.ધ.ધુ આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીનું પૂજન-અર્ચન અને દર્શન આશીર્વાદનો ભવ્ય કાર્યક્રમ રાખવામાં આવેલ છે. આ પ્રસંગે શ્રીજીમહારાજના સર્વે આશ્રિતોને દર્શન-પૂજનનો મહા લાભ લેવા તથા ગુરુઋણ અદા કરવા પધારવા અમારું ભાવભીનું આમંત્રણ પાઠવીએ છીએ.

લી.
મહંત સ્વામી નારાયણસ્વરૂપદાસજી
ના શ્રીહરિસ્મૃતિ સહ
જય શ્રી સ્વામિનારાયણ.

:: સ્થળ ::
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, કાલુપુર, અમદાવાદ.
તા. ૧૮-૭-૦૮, શુક્રવાર
સમય : સવારે ૭-૩૦ થી શરૂ થશે.



श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 2 अंक : 15 जूलाई -2008

अनुक्रमणिका

१	अस्मदीयम	०२
२	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	०३
३	हे युवानो !!	०४
४	आनन्द की झड़ी	०५
५	गुरु कृपा	०६
६	भक्त चिंतामणी	०७
७	श्री देवानंद स्वामी	०८
८	श्रीहरि के छठे एवं सातवें वंशज के मुख से	०९
९	यज्ञ की व्याकुलता	१०
१०	सत्संग सुरभि	११
११	सत्संग बालवाटिका	१२
१२	भक्तिसुधा	१५
१३	प्रश्न पेटी ???	१८
१४	सत्संग समाचार	२०

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री

तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम नारायणपुरा,

अहमदाबाद. फोन : २७४९९५९७,

९८२५३०९५९७ फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि

२२१३३८३५ (मंदिर)

२७४७८०७० (स्वा. बाग)

फेक्स ०७९-२७४५२१४५

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८

श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी

आज्ञासे

तंत्रीश्री

प.पू. स्वामी नारायणस्वरुपदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,

अहमदाबाद-३८० ००१.

दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.

फेक्स : २२१७६९९२.

www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये

E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य

प्रति वर्ष ५०-००

वंशपारंपरिक

देशमें ५०१-००

विदेश ५०००-००

प्रति कोपी ५-००

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :

महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी द्वारा

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए

श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अस्मदीयम्



चातुर्मास नजदीक आ रहा है। श्रीहरि के परम एकांतिक भक्त चातुर्मास दरम्यान विशेष नियम लेते है, जिसके लिये वे आतुर है। श्रीजी महाराज ने शिक्षापत्री में आठ उत्तम नियमों में भगवान की कथा, श्रवण, कीर्तन तथा भक्ति को अग्रिमता दी है। स्थूल-सूक्ष्म तथा कारण शरीर को निर्वासनिक करने के लिये एकमात्र श्रेष्ठ साधन श्रीहरि की लीला चरित्रमयी कथा है। प्रवृतिमार्ग की सफलताओ में बंधन कारी जागतिक व्यवहार किसी भी संयोग में उपस्थित न हो तथा जगतकी माया के साथ लड़ने की शक्ति या प्रतिकारक शक्ति महाप्रभु प्रदान करें, इसके साथ श्रीजी महाराज के लीलाचरित्रो में मन लगाये रखने का उपाय श्रीहरिने वचनामृत ग.म.प्र. ३८ में कहा है। भगवान के चरित्ररुपी जाल में अपने मनको लगाये रखना चाहिये। भगवान का ध्यान सतत करते रहना चाहिये। एक मिनट के लिये भी परमात्मा से अलग विचार नहीं होना चाहिये। भगवान के चरित्र, कथा तथा दर्शन का बारंबार स्मरण होते रहने से मानसिक स्थिरता बढती है। जैसे किसी गाँव में श्रीजी महाराज की पूजा हुई, कथा हुई, वह किसी के मुख से सुनने पर भी तद्रुप होजाना, यही भगवान के चरित्रों का स्मरणरुप है, बारंबार इसी तरह स्मरण की बात की गई है। जो अधिक न समझता हो या अधिक समझवाला हो दोनो के लिये यह एक श्रेष्ठ उपाय है। श्रीहरि कहते हैं कि हमने जितना कहा उतना ही आप मानकर किये हैं। मन निर्वासनिक होना चाहिये। तथा शरीर के साथ चाहे जितनी प्रवृति हो मन शुद्ध हो तो उसका कुछ नुकशान नहीं होता है। जिसके मन में भगवान के प्रति भावना बढती जाय या भक्ति दृढ होती जाय तथा जगत से मन निर्वासनिक होता जाय वह सबसे श्रेष्ठ सत्संगी है। मन को निर्वासनिक करने के लिये तप्त, कृच्छ या चान्द्रायणादिकतप भी भगवान के चरित्रों को सुनने के तुल्य है। इसलिये चातुरमास में विशेष नियम जितनी श्रद्धा हो उतना लेना चाहिये। लेकिन भगवान के चरित्रों की कथा तथा दर्शन में मन को लगाये रखने के लिये श्रीहरि के मूल ग्रन्थों का श्रवण कीर्तन करना चाहिये। इसी से प्रवृत्ति का विक्षेप दूर होगा और अंत:करण निर्वासनिक बने गा। ऐसा करने से आज तथा अंतकाल में भगवान का स्मरण बना रहेगा।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

-साधु नारायणस्वरुपदास का

जयश्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

जून -२००८

१. श्री प्रविणभाई कानजीभाई वैद्यराज के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, जीवराजपार्क। श्री विनयभाई रवजीभाई खीमाणी के यहाँ पदार्पण, थलतेज।

२. श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रांतीज के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

५. नारायणघाट (कड़ी) गाँव में पदार्पण।

६. श्री दिनेश सुधाकरभाई त्रिवेदी के यहाँ पदार्पण पालड़ी, कोचरब।

७-८-९. बामरोली (म.प्र.) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क में पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल श्रीजी महाराज के अंतर्ध्यान तिथि के निमित्त पदार्पण।

१५. श्री रवीन्द्रभाई के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, राणीप।

१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१७. श्री किरणकुमार हरिलाल भावसार के यहाँ पदार्पण, साबरमती।

श्री सहजानंद गुरुकुल असरावा में पदार्पण।

१८. सर्वोपरि नरनारायणदेव तथा बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज का अपने हाथों से केसर स्नान धूमधाम के साथ सम्पन्न किये।

महामंत्र लेखन का पूजन-अर्चन अपने हाथों से किये।

जामफलवाड़ी सी.टी.एम. श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१९. श्री भास्करभाई जे. ब्रह्मभट्ट के यहाँ पदार्पण, नारायणपुरा।

३०. श्री स्वामिनारायण मंदिर वड़नगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के वेबसाईट
www. swaminarayanmusgum.com
के वीडियो विभाग में श्री नरनारायणदेव के
पांचों आरती का दर्शन होगा।

हे युवानो !!

- कोठारी स्वामी रामानुजदासजी

बिगाड़ने वाले अनेक मिलेंगे लेकिन सुधारने वाला कोई होता है।

हे युवानो ! आपके भीतर अपरिमित शक्ति को समाजोन्नति के मार्ग पर लगाना होगा । आज की वर्तमान परिस्थिति को देखकर समझदार व्यक्ति के मन में निराशाजागृत होना स्वाभाविक है । चारो तरफ अशांति, अराजकता, अनीति, दुराचार, भष्टाचार का वातावरण बना हुआ है । आज का प्रत्येक व्यक्ति विनाशकी तरफ बढ रहा है । फिर भी यह जानते हुए भी वह कुछ कर नहीं सकता । उसके सामने मात्र निराशा ही दिखाई देती है, वह लाचार बन गया है । इसी परिप्रेक्ष्य में वह अकेलेपन का अनुभव करते हुए सोचता है मैं छोटा व्यक्ति क्या कर सकता हूँ । चारो तरफ अज्ञान, आलस्यरुपी अंधकार व्याप्त हो गया है । काल कब किसे ग्रसित करलेगा किसी को खबर नहीं है।

हम सभी बड़ भागी है जो भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा स्थापित मूल संप्रदाय, श्री नरनारायणदेव, श्रीहरि के अपर स्वरुप प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा मूल गादी के संतो के साथ संबन्धहुआ है । यही अपने जीवन की बडी प्राप्ति है । कारण यह कि अपने जन्मांतर का पुण्य उदित हुआ तो सर्वोपरि भगवान मिले । इसलिये मित्रो ! इस जीवन को प्राप्त करके संत समागम करके जीवन में सुख-शांति तथा आनंद का दिव्य लाभ लेकर धन्य बने । पूज्य महाराजश्री तथा संतो की आज्ञा में रहकर युवक मंडल बनाकर युवक सभा का आयोजन करना, शिबिर तथा उत्सव के माध्यम से युवकों में सत्संग की प्रवृति जागृत करके सत्संग के ६ अंग देव, मंदिर, आचार्य, शास्त्र, संत तथा सत्संग में आत्मीयभाव, सुहृदभाव रखकर श्रीजी महाराज तथा नंद संतो द्वारा चलाई गई सत्संग प्रवृति को उत्तरोत्तर बढाने का प्रयत्न करना पड़ेगा । आज संप्रदाय में नई क्रांतिलाकर, युवानों में जागृतिलाकर सत्संग में आमूल विकास पर विचार करना होगा । युवकों को मंडल, युवक शिबिर द्वारा प्रवृत्ति करनी पड़ेगी । सत्संग में श्रीहरि की आज्ञा तथा उपासना रुपी बल प्राप्त करके अगल-बगल के वातावरण को शक्तिशाली बनाना होगा । आज सत्संग में दूरदृष्टिवाले सत्संगियों की खूब जरुरत है । अपने सत्संग में युवाधन रुपी प्रकाश इतना अधिक है कि कोने कोने तक फैलाया जाय तो भी कभी कम नहीं होगा । मात्र युवा धनको अपने भीतर की सुषुप्त शक्ति को जागृत करके, आलस्य त्याग कर आगे आने की जरुरत है । एक जगरुक युवान दूसरे जन्म-मरण रुपी संसृति तथा गर्भवास जनित दुःख की मूलभूत विषयवासना के खड्ढे में पड़े युवान को अंगुली पकड़कर बाहर निकाल सकता है । आज की परिस्थिति का दास युवान स्वयं क्या कर सकता है, जो खुद दलदल में फंसा हो वह दूसरे को कैसे निकाल सकता है । अतः युवानो को समाज के तथा सत्संग के मार्गद्रष्टा नई दिशा देकर सत्मार्ग पर ला सकते है । सत्संग की प्रवृति समाज को बदल सकती है । समाज में कुरीतियां इतनी अधिक बढ गई है जो नई पीढियों को खोखला बनाती जा रही हैं । इसलिये सत्संग में विकाशरुपी प्रकाश के फैलते ही अज्ञान, मोहरुपी अन्धकार अपने आप नष्ट हो जायेगा । युवानों को अब आशा एवं उत्साह के साथ सत्संग में रहकर जीवन जीने की जरुरत है, इसी में उनका तथा उनके परिवार का उत्थान है।

जीवन में किसी को किसी भी क्षेत्र में उन्नत स्थान पर पहुंचना हो, प्रतिष्ठा प्राप्त करनी हो, लक्ष्य प्राप्त करना हो तो दृढ संकल्प एवं अदम्य उत्साह के साथ प्रबलपुरुषार्थ, अटूट आत्मविश्वास तथा श्रीजी महाराज की प्रसन्नता प्राप्त किये हुए महापुरुष का आशीर्वाद प्राप्त करके आगे बढ सकता है । चाहे वह आध्यात्मिक क्षेत्र हो या भौतिक-वैज्ञानिक क्षेत्र हो सर्वत्र उपरोक्त विषयों का चिंतन जीवन में आवश्यक है।

मानव विकास के मार्ग में भगवान का मार्ग अद्‌भुत एवं अगम्य होता है । कईबार परमात्मा बाहर की परिस्थितियों में विरोधउपस्थित करके मानव की आंतरिक स्थिति को दृढ बना देता है । भगवान कीचड़ में कमल को खिला ने के उत्तम कलाकार है।

हे युवानो ! हम शास्त्रों के वांचने से तथा संत समागम से कथा के माध्यम से अनेकों के जीवन में परिवर्तन देखे हैं।

- दूसरी मांता के तिरस्कार से भक्त ध्रुव परमपद को प्राप्त

अनुसंधान पृष्ठ - १७ पर...

आनन्द की झड़ी

बेस्वाद रोटी का मीठा स्वाद

- शा. हरिजीवनदास

भगवान के साथ घूमना अर्थात् आनंद ही आनंद। आनंद में ही मजा है। लेकिन ऐसा नहीं है। आनंद की प्राप्ति के लिये तप करना आवश्यक हैं। यहाँ तो सहिष्णुता, सादगी तथा कसौटी रुपी रेण के वृक्ष पर चढने जैसी वात है। यह घटना है रसमूर्ति श्रीहरि के साथ काठी पार्षदों की।

एक बार काठी भक्तों को श्रीहरिने आज्ञा की कि सभी लोग मेरे साथ पैदल चलें कोई घोड़ा नहीं लेगा। ऐसा कहकर श्रीहरि सोरठ देश के गाँवों में पधारे। जो हरिभक्त महाराज को बुलाने आवे उन्हें महाराज कहते कि जो इन काठियों को दूध, शक्कर, चावल खिलायेगा उसी के गाँव हम आयेंगे। ऐसा ही वे करने लगे। इस तरह प्रभु ने उन काठी भक्तों को दूध, शक्कर, भात खिलाकर पुष्ट किया।

उसी समय पंचाला से झीणाभाई महाराज को लेने आये। झीणाभाईने महाराज से कहा हे महाराज ! आप काठियों के साथ हमारे गाँव पधारिये। हम भी दूध, शक्कर, भात खिलायेंगे। महाराजने कहा, झीणाभाई ! अब हम इसमें परिवर्तन कर दिये हैं, जो हमें चीनी का बुरादा तथा बाजरी की रोटी खिलायेगा उसी के यहाँ जायेंगे। आप यह खिलाये तो आपके यहाँ आयेंगे। हाँ महाराज ! आपकी प्रसन्नता के लिये यही खिलायेंगे।

महाराज काठियों के साथ पंचाला पधारे। महाराज स्वयं चीनी के बुरादे के साथ बाजरी की रोटी खायें, बाद में काठियों को भोजन के लिये बैठाये। अलैया खाचर रोटी का टुकड़ा मुंहमें लगाते और दुर्गन्धआने पर नीचे रखदेते। सुराखाचर ने कहा महाराज ! अलैया खाचर रोटी को मुंह से लगाकर नीचे रख देते हैं। महाराजने कहा सुराखाचर ! क्यों ऐसा कर रहे हैं ? अलैया खाचरने कहा प्रभु ? यह लकड़ी मुंह में जाती है लेकिन यह रोटी मुंह में नहीं जा रही है। यह सुनकर महाराज खूब हंसे। इस तरह महाराज सभी काठियों को एक मास तक रोटी तथा चीनी का बुरादा खिलाये, इससे सभी दुबले हो गये।

वहाँ से महा प्रभु सभी के साथ जूनागढ पधारे। वहाँ किसी हरिभक्तने ज्वार का आटा तथा चौराइ का साग दिया। उस साग को आंटा के साथ मिलाकर तपेली में पकाये और काठियों को खिलाने लगे। सुराखाचर को हुआ कि यह कैसे खाया जायेगा। इसलिये किसी हरिभक्त के घर से दो रोटी मंगाये। उस रोटी की प्रतीक्षा में बैठे रहे। महाराजने बैठे हुए देखकर पूछा, क्यों बापू बैठे हो ? बापू ने कहा जो आप बनाये है वह गले नहीं उतर रहा है। यह सुनकर खूब आनंद किये।

वहाँ से आगे चले, किसी गाँव में गुण चाहक एक वैरागी बाबा ने आग्रहपूर्वक खीर बनवाकर खिलाया। काठियों को भी खिलाया गया। प्रभुने सूचना दी कि आप सभी अच्छी तरह भोजन करना क्योंकि भोजन करके आराम करना है। उधर काठी एक महीने से पेटभर भोजन नहीं किये थे। इसलिये मन भर भोजन किये। प्रभु की लीला न्यारी है। भोजन करने के तुरंत बाद सभी को कहे कि चलने के लिये तैयार हो जाओ, अभी निकलना है। सुराखाचर को हुआ कि ये तो चलाकर थका देंगे। एक तो भारी शरीर दूसरे पेट भरा भोजन। किस तरह चला जायेगा। इस लिये दो घोड़ा मंगाये। एक अपने लिये तथा दूसरा महाराज के लिये। घोडा देखकर महाराज ने कहा यह घोडा किसने मंगाया ? सुराखाचर की तरफ देखकर कहे कि अरे ! आपने मंगाया, इन दोनों घोड़ो को वापस करवादो, ऐसा ही किया गया।

ऐसा कहकर महाराज दौड़ने लगे और कहे कि जो पीछे रह जायेंगे उन्हें कल उपवास करना होगा। इसलिये सभी दौड़ने लगे। सुराखाचर का पेट बड़ा होने के कारण पीछे रह गये। जोरसे आवाज देने लगे महाराज ? रुक जाइये। हम कल उपवास करेंगे। आनंद मूर्ति महाराज कहने लगे कोई रुकेगा नहीं। सभी को पांच गाँव जितना दूर तक दौड़ाये। बाद में एक नियम किये कि जो मूछ पर ताव देगा वह विमुख समझा जायेगा। इतने में अलैया खाचर मूछ पर हाथ देने लगे। यह देखकर सुरखाचर ने कहा अलैया खाचर मूछ पर ताव दिये है, इसलिये ए विमुख है।

इसी तरह झीझावदर में एक नया प्रकरण प्रारम्भ किये। वह यह था कि भोजन करते समय जिसका हाथ जिस वस्तु पर प्रथम पड़ेगा, उसी को खाना होगा। पंक्ति में बैठे सुराखाचर का प्रथम हाथ गाजर के अंचार पर पड़ा। गाजर में नमक अधिक था। खाया न जासके ऐसा था। इसलिये उन्होंने एक कीर्तन गाया "गाजरडा मारा वैरी रे" यह सुनकर हंसते हुए बोले, रहने दीजिये, बापू गजरडा, इसतरह अलौकिक लीला करके महाराज काठी भक्तों को आनंदित करते रहे।

गुरु कृपा

- साधु धर्मकिशोरदास गुरु स्वामी नारायणस्वरुपदासजी

''प्रेष्यच्छति गुरुः प्रीतो अक्षरधामं योगि दुर्लभम् ।''

योगियों को भी दुर्लभ ऐसे अक्षरधाम का दर्शन तो गुरु ही कराते हैं।

आज जगत में गुरुं की महिमा खूब गाई जा रही है। एक वात तो जग प्रसिद्ध है कि जिसका शास्त्रों में, पुराणों में तथा अन्य ग्रन्थों में महिमा गाई गई हो तथा जिसकी महिमा ग्रन्थों में भरी हो उन्हीं की महिमा गाई जाती है। स्वामिनारायण भगवानने तो इस धरतीपर पधारकर संतो की महिमा बढायी है। यह महाप्रभु की असीम कृपा ही कही जायेगी। उस कृपा दृष्टि का फल आज सभी के सामने प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। उस कृपादृष्टि के फल है अपने प्राण प्यारे प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, जिसके दर्शन मात्र से अन्तरआत्मा प्रसन्न होजाती है। रोज प्रतिदिन प्रातः जब आचार्य महाराजश्री बद्रिपति श्री नरनारायणदेव के दर्शनार्थ पधारते हैं तब अनेक भक्त आचार्य महाराजश्री के चरण स्पर्श के लिए गिर पड़ते हैं। कितना सरल स्वभाव, सभी को समभाव से देखने वाले तथा ऊँच-नीच, छोटे-बड़े की भावना नहीं रखते, एक स्थिति में रहते है। बस ! भक्तों को श्रीजी महाराज की पहचान कैसे हो ? तथा युवानो के लिये अपनी धरती हो या विदेश की धरती हो, युवा शक्ति को सच्चे मार्ग पर लाने के लिये, व्यसन से मुक्ति के लिये, सतत युवा शिबिर, कैम्प का आयोजन दिन प्रतिदिन करते रहते हैं। जो युवा शक्ति एक साथ मिलकर जगत में सत्संग में क्रांति ला सकती है। ऐसे युवानो को धर्म मार्ग पर लाने के लिये सतत कार्यरत रहते हैं। इसके साथ जो परमात्मा के अपर स्वरुप हैं वही परमात्मा का स्वरुप भक्तों में उतरे यही नित्य प्रयास रहता हैं। तथा जो भक्त इनके साथ जुड़े हैं वे सच्चे मार्गपर चल रहे हैं। अर्थात् भक्ति मार्ग पर आगे बढ रहे हैं। जिन्हें सच्चे मार्ग पर चलना चाहते हैं उन्हें महाराजश्री की शरणागति स्वीकार करनी पड़ेगी।

''जेने जोइये ते आओ मोक्ष मांगवा रे''

जिन्हे मोक्ष चाहिये वे धर्मवंशी आचार्यश्री की शरणागति स्वीकार करलें तो अपने आप मोक्ष प्राप्त होजायेगा। विना साधन के भवसागर पार हो जायेंगे। चींटी खूब छोटी जीव है। घर-आंगन की छोटी-छोटी यात्रा में ही उसका दिन पूरा हो जाता है। चींटी को यदि पूना से दिल्ली जाना हो तो कितना दिन लगेगा ? इसकी कल्पना हम कर सकते हैं। लेकिन व्यक्ति के वस्त्र ऊपर चींटी चिपक जाय तो वह व्यक्ति यदि दिल्ली जाने वाली ट्रेन में बैठे तो विना प्रयास के चींटी दूसरे दिन दिल्ली पहुँच जायेगी। इसी तरह हम अपने धर्मगुरु की शरणलेते हैं तो हम भी भवसागर के दुर्गममार्ग को विना प्रयास किये पार कर सकते हैं।

मां-बाप मात्र जन्म देते हैं, जीवन तो गुरुजी से ही मिलता है। गुरुजी स्वयं शक्ति संपन्न होते हैं। लेकिन वे अपनी शक्ति पर अभिमान नहीं करते। फिर भी वे स्वयं भवसागर से पार होते हैं। और साथ ही शिष्यों को भी भवसागर से पार करा देते हैं। हकीकत में निरीक्षण करें तो खबर पड़ेगी कि गुरु के विना जीवन अधूरा है।

जीवन में एक ही गुरु होना चाहिये। गुरु नहीं तो जीवन का आरम्भ नहीं। रास्ते में जाते हुए सभी पत्थर को पैर मारते हैं लेकिन वही पत्थर शिल्पी के हाथ में आजाय तो मूर्ति बन जाता है। गुरु शिल्पी है। वहीं नर को नारायण बनाते हैं। सही भी है जब मनुष्य गुरु कृपा प्राप्त करके प्रभुभक्ति करता है तव वह फलीभूत होता है, अर्थात् गुरु कृपा के विना कोई कार्य सफल नहीं होता है। रावण महान शक्तिवान था, उसके पास शक्ति तो थी ही, लेकिन भक्ति नहीं थी, विना भक्ति के शक्ति कितना अनर्थ करती है। वह रावण से सीखना चाहिये। रावणने विचार किया था कि समुद्र का जल मीठा करदेंगे, चन्द्रमां का कलंक दूर कर देंगे तथा स्वर्ग तक सीढ़ी बनादेंगे। लेकिन कुछ नहीं कर सका, उसके पास सबकुछ था ''तख्त-ताज-वैभव विलास, अगर नहीं था तो इसका गुरु कोई नहीं था। इसलिये गुरु के विना भक्ति, शक्ति-संपत्ति कितना अनर्थ करती है। इसका जीता जागता उदाहरण ''रावण'' है। अर्थात् यह मनुष्य देह प्राप्त करने के बाद गुरु अवश्य कर लेना चाहिये। कारण यह कि गुरु बनाने से प्रभु का सांनिध्य अपने आप मिल जाता है।

एक छोटी सी चींटी यदि विना परिश्रम के अपने गन्तव्य स्थान तक पहुंच सकती है तो क्या हम नहीं पहुँच सकते ? इसीतरह अपने धर्मवंशी आचर्य महाराजश्रीजो अपने धर्मगुरु है यदि उनकी

अनुसंधान पृष्ठ - १९ पर...

भक्त चिंतामणी

- साधु घनश्यामप्रकाशदास - जमीयतपुरा (महंत स्वामी माणसा)

"महाराज आपके पास थोड़ा समय हो तो बात करना है ?" अरे, मुक्तानंद स्वामी, आप ऐसा पूछते हैं ? चाहे हम कितना भी व्यस्त हो तो आप रोकने के पूर्ण अधिकारी है ? कहे क्या कहना हैं ।" आप का यह बड़प्पन है जो अधिकार आप देते फिरते है, लेकिन प्रभु मुझदास को यह शोभेगा नहीं । इसलिये अधिकार की बात छोड़कर विषय की वात कीजिये । मेरे हृदय में एक चिंतन हो रहा है। संकल्प-विकल्प का द्वन्द्व खड़ा हो गया है तो.....

मैं ..... मैं ..... मुक्तानंद स्वामी सुनिये, हम छपैया में धर्म भक्ति द्वारा प्रगट हुए है । अनेक बाल चरित्र किये है । कालीदत्त जैसे असुरों का बधकिये है । बाद में माता-पिता के साथ अयोध्या आकर रहे, वहाँ अनेकचरित्र किये, वहीं पर विद्याभ्यास किये ।

मुक्तानंद स्वामी : यह सभी वात हमें लिखना है, कारण यह कि आपके चरित्र समग्र सत्संग के लिये अमृत के समान हैं । फिर भी यह वात कभी हम कहेंगे लेकिन अभी जो मेरी समस्या है, उसकी उपाय करिये ।

श्रीजी महाराज : यह भी होजायेगा लेकिन मुक्तमुनि हम कहाँ आकाश में विना निशाने की गोली चलाते हैं ? अवधपुरी में नित्य श्री हनुमान गढी जाते थे । सरयू में स्नान करते थे । पिताजी के पास शास्त्रों का अभ्यास करते । सभी मित्रों के साथ सायंकाल खेलते थे । प्रतिदिन तत्वज्ञान शास्त्रचर्चा में प्रश्नों का यथार्थ उत्तर देते थे । श्रीजी महाराज आज अच्छे मूड में नहीं है । मेरे प्रश्न का उत्तर न करके दूसरी-दूसरी वात कर रहे हैं । मुक्तानंद स्वामी मन ही मन विचार करते है कि श्रीहरिकी वाणी पुनः सुनाई देती है - इस तरह हमें यज्ञोपवीत जब से मिली तभी से वनवास का विचार हो गया था । परंतु माता-पिता के मोक्ष तक रहने का विचार करके जब इस क्रिया से मुक्त हो गया तो मात्र एक कौपीन धारण करके वन में चल पड़ा । उसी दिन से शरीर के ऊपर दया का भाव खत्म हो गया । शरीर को तप में तपाकर, मन को भयंकर वन में डराडराकर डर लगने से भुला दिया है

मुक्तानदं स्वामी : दोनो हाथ जोड़कर, नतमस्तक होकर, गद्‌गद् भरे कंठ से प्रार्थना करता हूँ कि हे महाराज इस समय ऐसे लीलाचरित्र को सुनना ठीक नहीं है । उद्वेगभरे अशांत मन से मैं यथार्थ ग्रहण नहीं कर सकता हूँ । इसलिये हे कृपानाथ ? कृपा करके इधर-उधरकी बात छोड़कर मेरा अशांत मन शांत हो तथा उद्विनता शांत हो जाय ऐसी कोई उपाय बताइये - हाँ यह वात भी सत्य हैं कि विना विचारे सुनाने लगा ? इस अशांत मन की शांति का एक मात्र उपाय तो यह है कि आप गाँव-गाँव फिरकर धर्मार्थ आवे, इससे स्थान बदल जायेगा और मन भी हल्का हो जायेगा ? आपको कैसा लगा ?

हाँ, यह बात कुछ ठीक लग रही है । तो अच्छे काम में देर क्यों ? आज ही निकल पड़ते है.... और सत्संग की "मां" मुक्तानंद स्वामी गाँवो में धूमने के लिये निकल पड़ते । राधावाव पहुँचते ही स.गु. नित्यानंद स्वामी का मंडल सामने मिल गया । परस्पर दंडवत प्रणाम किये । एक दूसरे का हाल समाचार पूछकर वृक्ष की छाया में आराम के लिये बैठ गये । उत्सव के अवसर पर गाँव-गाँव से संत-हरिभक्तों का टोला गढड़ा की तरफ आ रहा हैं । उसी समय बड़े संत गढडा से बाहर जा रहे है । यह देखकर नित्यानंद स्वामी को संशय हुआ तो प्रत्युत्तर में स.गु. मुक्तानंद स्वामी ने उपरोक्त संवाद कह सुनाते हैं । जिसे सुनते ही नित्यानंद स्वामी को सब समझ में आ गया । और कहने लगे आप बड़े संत है, शांत है, समझदार हैं, विद्वान तथा ज्ञानी है, सबकुछ समझ जाते हैं । स्वामी ! आपका प्रश्न आप ही तक सीमित नहीं है । समग्र मुमुक्षु समुदाय के लिये उपयोगी इस प्रश्न का उत्तर श्रीहरिने स्वयं दे दिया । जिसे स्वीकार करने के बदले बीच में छोड़कर उपेक्षाकरके चल दिये । क्या कहे हैं स्वामी ? हमने अपने इष्टदेव परम कृपालु परमात्मा की उपेक्षा की है ? क्या अंजान में मुझसे उनका अपमान हो गया है ? जल्दी कहिये, हे नित्यानद स्वामी ? आप तो यथार्थ रुप में शास्त्र वेत्ता है तथा ब्रह्मवेता है । हमारा आप हित करे, आप मेरे सच्चे मार्ग का दर्शन बने । आपकी विन्ती कर रहा हूँ । मैं आपका सेवक हूँ फिर भी आज विनम्रभाव से निवेदन करता हूँ कि स्वामी ! मन में बुद्धिका दावानल सुलग रहा हो तथा उसी में उद्‌वेग की तरंग उठ रही हो, अशांत की आंधी उड रही हो, तथा चारो तरफ से अंतःशत्रुओं का आक्रमण हो गया हो, उसी समय अमोधऔषधतथा रामबाग इलाज करने के लिये श्रीजी महाराज ने अति करुणा करके अपने समक्ष प्रस्तुत किया है । वह है प्रगट भगवान के लीला चरित्रों का गान करना एवं सुनना ।

अनुसंधान पृष्ठ - १४ पर...

श्री देवानंद स्वामी

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

सहज आनंद के संदेशक श्री सहजानंद स्वामी के समकालीन अष्ट महा कवियों में स्वामी देवानंद का नाम अग्रस्थान पर है। इनके पूर्वाश्रम का नाम देवीदान गढवी था। भालप्रदेश में हंद्राला-भाल स्टेशन से करीब दश किलोमीटर दूर बडोल गाँव में उनका जन्म हुआ था। संवत १८५९ कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा के दिन देवीदान उत्पन्न हुए थे। पिताजी का नाम जीजीभाई तथा माता का नाम बनजी था। देवीदानजी के मामा का गाँव मूली था। गृहस्थाश्रम में वे शिव के उपासक थे। भगवान शिवने ही दर्शन देकर कहा कि "यदि आप अपना कल्याण चाहते हैं तो अवतार के अवतारी ऐसे भगवान स्वामिनारायण की शरण में जा।

हृदय में कल्याण की शुद्ध भावना थी। उसमें भी भगवान शिवने वरदान भी दिया कि आपके गाँव में पुरुषोत्तम नारायण पधारेंगे। वे अलौकिक ऐश्वर्य लीला करके सभी को चकित कर देंगे। इसलिये उन्हीं के शरण में जा। तुम्हारे कंठ में सरस्वती का वास होगा।

श्रीजी महाराज जेतलपुर में यज्ञ किये। यहीं से वे बड़ोल गाँव पधारे। महाराज को थोडी जल्दी थी। इसलिये महाराज बैलगाड़ी पर बैठे-बैठे प्रसाद ग्रहण करने लगे। प्रसाद में दूधको पीते समय दूधकी धार केहुनी के सहारे बाहर गिरने लगी, वे उसधार को केहुनी तक जीभ लेजाकर चाटने लगे। यह अवतार के अवतारी की अमानुषी लीला देखकर देवीदान के मन में निश्चय होगया कि मनुष्य की जीभ केहुनी तक नहीं पहुँच सकती है, ये तो परमात्मा ही हैं। भगवान शंकर ने जो कहा था कि मोक्षदाता मिलेंगे तो येही हैं ऐसी हमें प्रतीति हो रही है। उसी समय वे गृहत्याग करके सहजानंद स्वामी के आश्रित होगये। दीक्षा देकर उनका नाम देवानंद रखे। ब्रह्मानंद स्वामी से पिंगल शास्त्र तथा कविता का अभ्यास किये। एक अच्छे गायक के रुप में नाम प्रसिद्ध हुआ।

देवानंद स्वामी कवि दलपतराम के गुरु थे। एक वैरागी कवि के रुप में सम्प्रदाय में जाने जाते थे। स्वामिनारायण मंदिर में देवानंद स्वामी कृत बोधात्मक गीतों को गाया जाता है। देवानंद स्वामी कभी पंडित होने का दावा नहीं किये। साधु के रुप में सादा जीवन निर्मल था। ब्रह्मानंद स्वामी के अक्षरवास के बाद देवानंद स्वामी मूली मंदिर के महंत बने थे।

गान विद्या में वे बड़े कुशल थे। कवि भी उतने अच्छे थे। इसीलिये कवीश्वर दलपतराम के काव्य गुरु थे। इनके कीर्तन सुनकर ही दलपत राम शिष्य बने थे। कवि होते हुए भी आध्यात्मिक ज्ञान उत्तम था। महाराजमे बहुत प्रेम था। महाराज के ऊपर हजारो कीर्तन लिखे हैं।

संवत १९१० श्रावण कृष्ण-९ के दिन देवानंद स्वामी एक दरजी भक्त को कहे "मैं कल धाम में जाने वाला हूँ, मेरे लिये विमान तैयार कर देना।" स्वामी की स्वस्थ शरीर देखकर दरजी भक्त को आश्चर्य हुआ, तब स्वामीने कहा जब तेरे घर के बाहर कुम कुम के पांच पैरों के निशान होंगे तो सच मानना।"

दूसरे दिन दरजी भक्तने दरवाजे के बाहर कुमकुम के पद चिन्ह देखा। उससे यथार्थ हो गया। वह मंदिर में जाकर देखा तो स्वामी शरीर छोड़ चुके थे। मूली में भोगावाना नदी के किनारे देवानंद स्वामी की पंचभौतिक शरीर का अग्नि संस्कार किया गया। आज भी वहाँ मूली मंदिर के बगीचे में भोगावाना नदी के किनारे देवानंद स्वामी की स्मरणिका मौजूद है।

श्रीहरि के छठे एवं सातवें वंशज के मुख से

संकलन - गोरधनभाई वी. सीतापरा (बापुनगर)

ता. १२-३-०८ फाल्गुन शुक्ल-५ को कांकरिया मंदिर के पाटोत्सव तथा ब्रह्मभोजन के महोत्सव प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री : महाराज एक समय एक गाँव में सरोवर के किनारे वृक्ष की छायों में विराजमान थे । महाराज को नदी, सरोवर, वृक्ष खूब प्रिय था । नदी, सरोवर देखकर महाराज स्नान के लिये तैयार हो जाते थे । महाराज संतो से कहते है इस वृक्ष की घटा कितनी अच्छी है । इतने में द्वेषी ब्राह्मण यह सुनकर महाराज से कहा, स्वामिनारायण भगवान ? आप इस घटादार वृक्ष के नीचे ब्रह्मभोजन कराइये तो और सुशोभित होगा । उस द्वेषी ब्राह्मण के मन में था कि इतनी जल्दी ये व्यवस्था इतने अधिक ब्राह्मणों को खिलाने के लिये कैसे करपायेंगे । इससे इनकी इज्जत जायेगी । महाराजने कहा भूदेव ? रसोई बनाने वाले ब्राह्मणों को बुलवाइये । हम कल ही ब्रह्मभोजन करेंगे । महाराज उस ब्राह्मण को ही यह कार्य भार सोंपे । हरिभक्तों को सिद्धा सामग्री खरीदलाने की आज्ञा किये । लेकिन उन दिनों इतनी जल्दी सिद्धा सामग्री की व्यवस्था कैसे हो सकती थी । संयोग हुआ ऐसा कि उसी समय शहर में जाम साहब की सवारी निकलने वाली थी । जिसके लिये एक शेठने सिद्धा सामग्री की सम्पूर्ण व्यवस्था की थी । परंतु किसी कारण से जाम साहब की सवारी नहीं निकली । शेठ बाहर गये थे । इधर हरिभक्त शेठानी के पास पहुँच गये । महाराज बहुत उदार थे । इसके साथ हिसाब किताब भी व्यवस्थित रखते थे । हरिभक्तों को सिखाकर भेंजे कि जो सामान हम लेजायेंगे उसमें जो सामग्री बचेगी हम आपको वापस करदेंगे । इस शर्त पर सिद्धा सामग्री आगयी । ब्राह्मणो के लिये रसोई तैयार हुई, महाराज सभी को मन भर खिलाये सभी खूब प्रसन्न हुए । बाद में उस ब्राह्मण के पास जाकर कहे कि क्यों भूदेव ! अब इस वृक्ष की घटा की खूब शोभा है न ! ब्राह्मण क्षुभित होकर कहने लगा कि आप यथार्थरुप में स्वामिनारायण भगवान हैं ।

ब्रह्म भोजन पूर्ण हुआ । बची सिद्धा सामग्री हरिभक्त शेठानी के पास लेगये । परंतु आश्चर्य की बात तो यह कि यज्ञ में सिद्धा सामग्री का उपयोग नहीं हुआ था । जितनी सामग्री लेगये थे उतनी पूरी थी । इसलिये शेठानी पैसे लेने के लिये मना कर दी । महाराज ने पुनः भक्तों से पैसे भेंजे लेकिन पैसे लेने के लिये मना करते हुए ऐसा कही कि प्रभु ? अंत काल में हमें अपने धाममें लेजाकर हमारा कल्याण करना । महाराज उस शेठानी को अंतिम समयमें अपने धाममें लेगये ।

जब छोटे थे तब कांकरिया मंदिर जाते समय कुछ भी नहीं था । यहाँ केवल हनुमानजी की छत्री थी, उस समय जब उधर निकलते तो लगता कि अहमदाबाद से बाहर जा रहे है । आज तो महाराज की कृपा से यह विस्तार खूब विकसित हो गया है । सत्संगकी खूब वृद्धि हुई है ।

हनुमानजी से हमें पतिव्रता भक्ति तथा निष्ठा सीखनी चाहिये । कईबार बड़े भक्तों में भी यह कमी दिखाई देती है । एक हरिभक्त श्री नरनारायणदेव की पांचो आरती का दर्शन करता, परंतु रास्ते में आते समय विमुख का मंदिर आता वहाँ भी गाड़ी खड़ी करके हाथ जोडे तथा आरती ले । कईबार तो श्रृंगार आरती के समय मेरी गाड़ी के आगे उनकी गाड़ी होती । रास्ते में उनकी गाड़ी खड़ी होती तो मेरी गाड़ी को उन्हीं के पीछे खडी करनी पड़े । एक बार वह हरिभक्त मेरी आफिस में दर्शन करने आया तो हमने कहा कि जब आप दर्शन करने आते हैं तो रास्ते में बीबी का गोखला भी आता है वहाँ भी ऐसा करना चाहिये । उसने कहा कि आप ऐसा क्यो बोल रहे हैं ? तब मैंने कहा कि आप को श्री नरनारायणदेव में क्या कमी दिखाई देती है जो रास्ते में प्रत्येक स्थान पर चावल रखते जाते हैं । उस समय वह भूल तो स्वीकार किया..... ! एक हरिभक्तने मुझसे कहा आप से पांच मिनिट एकांत में मिलना है । हमने कहा ठीक है । वे स्वामिनारायण बाग निवास स्थान पर आये । आकर कहे कि आप जो नंग पहनते हैं वह नंग शनिग्रह का नंग है । मुझे भी शनि ग्रह पीडित करता है । हम भी आप से जानकर विधिकरके ऐसा ही नंग पहनना है । हमने कहा आपके इतने वर्षों का किया कराया सब व्यर्थ गया । शनि, मंगल, बुधइत्यादि ग्रह भगवान श्री नरनारायणदेव के चरण में समर्पित कर देना चाहिये । हमें कोई भी ग्रह परेशान नहीं कर सकता है । हम तो गृहस्थ हैं, सौख से कोई भी अंगुठी पहन सकते हैं । इसी तरह अनेकों प्रकार से समझ में फरक होता हैं । माला फेरने में कमी हो तो चलेगा, परंतु पतिव्रता की भक्ति में या निष्ठा में कोई कमी होगी तो महाराज कभी प्रसन्न नहीं होंगे ।

अनुसंधान पृष्ठ - १९ पर...

यज्ञ की व्याकुलता

- चंद्रकांत मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)

प्रातः होते ही श्रीहरिने कहा, चलो कांकरिया नहाने चलते हैं। लेकिन सभी लोग अपने हथियार को साथ रखना। अश्ववाले अश्व ऊपर बैठकर आवें। वृद्ध, स्त्री, बालक अपने घर रहें। आवाज करते हुए सभी निकले लेकिन अवसुरों के घर से बालक भी बाहर नहीं आये। कितने गुप्तचर गुप्तढंग से घूम रहे थे। पर शस्त्र धारियों की विशाल संख्या देखकर बुद्धि हेरागई। सभी स्नान करके सरोवर के तट पर सभा किये। शहर में से अनेकों भक्त दर्शन करने आवे। वे सभी फल-फूल इत्यादि श्रीहरि के लिये लाये थे। श्रीहरि की पूजा-स्तुति करके भेटं सौगात रखे। दामोदर रणछोड़, लालदास, हीराचंद, माणेकचंद, शंभुदास, कुबेरसिंह, इत्यादि सभी जाइयेगा। तब महाराज स्वयं बोले कि हे भक्तों ! आप सभी का मनोरथ पूर्ण किये विना मैं अपने धाम में नही जाऊँगा। कुछ देर वातचीत करने के बाद मुक्तमुनिने कहा अब आप बात करें हम गाँव में जा रहे हैं।

महाप्रभु नथुभट्ट के घर भोजन करने बैठे। इतने में मुक्तमुनि आ गये महाराज ने कहा क्यों इतनी जल्दी ? हे महाराज ! आप के निकलते ही वहाँ अनेक शस्त्रधारी वैरागी गांजा, भांग पीकर मदोन्मत होकर क्रोधमें जोरों की आवाज करते हुए हमारे ऊपर आक्रमण क़र दिये। उस विषम परिस्थिति में आपका स्मरण करके भाग निकला और शहर में प्रवेश कर गया। कुछ लोग पीछा करते हुए बन्दूक छोड़े लेकिन आपके प्रताप से हम बचकर यहाँ भाग आये। यहाँ तक पहुँचने में तथा मेरी रक्षा करने में बहुत सारी महिलाये थी। अब आप बताइये हम क्या करें। श्रीहरिने कहा हे मुनिवर ! आपत्काल में आत्मरक्षार्थ जो भी आपने किया वह ठीक ही था। यह चर्चा हो रही थी। कि दरवाजा खटखटाने की आवाज आई।

शूरवीर पार्षद दयालजी सावधान हो गये। अन्य भी सावधान मुद्रा में खड़े हो गये। नथु भट्टने खिड़की खोली।

दुष्मन भीतर घुस आये। दयालजी सिंह की तरह गर्जना किये। खबरदार यदि अंदर प्रवेशकिये तो। घास की तरह काट डालेंगे। नथुभट्ट सरलता से कहे कि आपलोग जो बेश धारण किये है। इस बेश में भगवान होते हैं। हम ब्राह्मण है। ब्राह्मण भगवान को प्रिय होते हैं। इसलिये हम सभी अपनी मर्यादा में रहे तो ठीक होगा। आप सभी वापस चले जाइये। श्रीहरि को पकड़ने के लिये आये हुए वे बैरागी कुछ सुने ही नहीं।

घर में जबरदस्ती प्रवेश करने लगे। यह देखकर नथुभट्ट को क्रोधआ गया। और कहने लगे। यदि आप लोग वापस नहीं जायेगें तो मैं अपनी एक ही बेटी को मारकर आप सभी को खून से नहवा दूंगा। फिर भी उन सभी को कोई असर नहीं हुआ। अन्दर प्रवेश करने के लिये खिड़की तोड़ने लगे। उसी समय गाँव का मुखिया वहाँ पहुँच आया। इस स्थिति को देखकर बाबाओं को गाली देते हुए कहने लगा, साला लगोटी धारी तुम लोग इसी के लिये यहाँ डेरा तम्बू डाले हो। किसके कहने से यहाँ रुके हो ? स्वामिनारायण आप सब का क्या बिगाडे है। मैं इन्हे यहाँ बुलाया हूँ। इनके यज्ञ में विघ्न कर रहे हो ? इतने में एक असुर आगे आकर ललकारा लो पहले तुम्हारा ही मस्तक काटता हूँ। ऐसा कहकर वह तलवार म्यान से खींच लिया। ज्यौंही वह तलवार का वार किया कि भगु खांट बिजली की तरह झपट कर तलवार की मार को अपनी तलवार से रोक दिया। बाद में मुखिया ने पार्षदो से कहा ये पागल कुत्ते हैं इन्हे जीवित छोड़ने लायक नहीं है। पार्षद महाप्रभु के पास गये और कहने लगे महाप्रभु अब आप आज्ञा दीजिये। इन दुराचारियों का बधआवश्यक है। महाप्रभु ने कहा जब मुखिया आप सब के साथ हैं तो आप सभी उत्साह के साथ सेवा करना।

दयालजी, मगुखांट, डुंगरजी, धमडका के रामसिंह, बंधिया के जाडेजा, क्षत्रिय, डांगरवा के अमराजी, अगराजी तथा अन्य शूरवीर क्षत्रिय भगवान स्वामिनारायण की जय बोलकर वायुवेग से शत्रुओ पर टूट पड़े।

"चार पाड्या चौक मांज हता असुर मां अधिपति।
बीजा भणेमी भागिया, भाईओं आपणी पण आ गति ॥"

चार आगेवानो को तो बंदूक धारी क्षणमात्र में गिरा दिये। चमकती तलवारों की धार से शत्रुओं के माथे को काटडाले। शूरवीरों के लक्ष्यवेधी प्रहार से कोई बच नहीं सका। सभी वैरागी बाबा ठन्ढे पड़ गये। जो बचे वे भाग खड़े हुऐ।

भाई रुधिर सरि संग्राम में लखी हरख भूत पिशाच ही।
भरी भरी शोचित संचही अगनित जोगनी नाचहीं।
आमिष भरख खगखात आमिष श्वान श्याल अपारही।
भये अधिक ऊद्भव हरख उर हर मुंड मालाधार हीं ॥

कविने उपरोक्त कविता में लिखा है कि संग्राम में रक्त की नदी वहने लगी। मांस खाने के लिये कितने श्वान, श्रृंगाल इत्यादि पशु एकत्रित हो गये। आकाश में से गीध, चील, बाज इत्यादिपक्षी मांस खाने उतर गये। आश्चर्य की बात तो यह कि स्वंय भगवान शिव आ गये तथा मुंडकी माला गले में धारण करके उत्सव करने लगे।

थोड़े समय पूर्व जहाँ पर योद्धाओं की जयनाद सुनाई देती थी। वाद्य यंत्रो की आवाज सुनाई देती थी। मारो काटो सुनाई देता था। वहीं पर वह स्मशान भूमि बन गई। बाद में देवाधिदेव के पास सभी पार्षद आये और युद्ध की गाथा सुनाये। प्रसन्न होकर श्रीहरि अपने संजीवनी के समान हाथों से रणवीरों को स्पर्श करते ही दुःख दर्द दूर हो गया।

"एम भार उतार्या भूमि नो वैशाख वदि चतुर्दशी।
ते दि पापी मारियाजे आव्या ता मारवा ॥"

सत्संग सुरभि

ऐसा विरल कोई

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

प्रातः काल सभी लोग बाजरी की बाल बीन रहे थे, उसी समय महाराज लक्ष्मीवाड़ी जाने की इच्छा किये। यह सुनते ही रतजी तथा मियांजी तुरंत खड़े हो गये और दौड़ते हुए लक्ष्मीवाड़ी गये। महाराज के लिये बैठने की व्यवस्था किये। लक्ष्मीवाड़ी में जाने के लिये घोड़ी ले आये। महाराज घोड़ी के ऊपर बैठकर लक्ष्मीवाडी पधारे। महाराज के पीछे-पीछे संत एवं हरिभक्त भी चलने लगे। बालबीनने का काम जहाँ का वहाँ रह गया, यह तो बाद में भी हो सकता है, हमें ही यह काम करना है, करेंगे शांति से लेकिन महाराज के साथ बगीचे (फुलवाड़ी) में जाने का अवसर पुनः कहाँ मिलेगा ?" ऐसी चर्चा परस्पर चल रही थी। सम्पूर्ण दरबारगढ खाली हो गया। वहाँ मात्र जितने काम कर रहे थे वही शेष रहे।

लक्ष्मीबगीचे में सभा एकत्रित हो गयी। सभी को देखकर महाराज ने पूछा कि सभी तो आये लेकिन घर का मालिक यहाँ आया है ? वह यहाँ क्यों आयेंगा ? यह सुनकर सभी लोग आश्चर्य में पड़ गये।

"महाराज किसकी बात कर रहे हैं ? हम सभी के मालिक तो स्वयं आप है जो सम्मुख बिराजमान हैं। तो अन्य किस मालिक की बात कर रहे हैं ?

किसी को जब स्पष्ट ख्याल नहीं हुआ तो सुरा खाचर ने महाराज से पूछा, हे महाराज ! आप किस घर के मालिक की बात कर रहे हैं ? यह बात आप मुझसे पूछ रहे हैं ? आप सभी पहले यह विचार कर लिजिये कि यहाँ कौन-कौन होना चाहिये और कौन-कौन है ? उस समय रतनजी तथा मियांजी दरबार में रुके हुए थे। बाजरी की बाल को व्यवस्थित करने के लिये रुक गये थे। इसके बाद वे दोनो सारे चौगान की सफाई करके दरी बिछाकर महाराज की गद्दी तकिया लगा दिये थे। यह सभी काम करते सायंकाल हो गया। सायंकालीन दीपक भी जलादिये। उसी समय महाराज लक्ष्मी बगीचे से वापस आये। उनके साथ संत हरिभक्त दरबार में प्रवेश किये। सभी को बुलाये और थोड़ी ऊंची आवाज में कहने लगे।

"देखो घर के मालिक ये हैं"। रतनजी तथा मियांजी ये दोनों यहाँ रहकर सभी व्यवस्था किये तथा आगे की तैयारी भी किये। इन्हें किसी ने कहा क्या ? आप ऐसा करना या वैसा करना। ये अपने मन से समझकर जो उचित था वह किये। उसी रात सभा में रतनजी तथा मियाजी को बुलवाकर पुष्पहार पहनाकर सम्मानित करके सभी से कहने लगे "भक्ति की रीति तो अनेक है। कोई पुत्र भाव से कोई संतान भाव से, कोई सखा भाव से, तो कोई पतिव्रता की रीति से भक्ति करता है, इस तरह सभी अपनी प्रकृति के अनुसार भक्ति करते हैं परंतु हम तो स्वामी-सेवक की तरह भक्ति को पसंद करते हैं। इसका रहस्य यह है कि जो अनन्य सेवक होगा वह अपने स्वामी का निरंतर चिंतन, चितवन करते हुए अपने को भूल जायेगा वह अपने स्वामी की सेवा क्रिया कलाप में इतना मशगुल हो जायेगा कि स्वयं को भूल जायेगा तो क्या वह सेवक है ? नहीं वही स्वामी है, वही मालिक है। त्रिभुवन में जहाँ-जहाँ हमारे एकांतिक भक्त होंगे वे हमसे पलमात्र भी दूर नहीं है। ऐसे अनन्य भक्त में हमारा स्वरुप देखना, उसी को सत्संग का मालिक समझना। सत्संग तो करते हैं लेकिन रतनजी तथा मियांजी की तरह सत्संग का मालिक बनकर सत्संग करें तो भक्ति का आनंद ही कुछ और होगा। वहाँ उपस्थित सभी को ऐसा हुआ कि दुनियां में कौन ऐसा होगा जो अपने सेवक को ही मालिक समझेगा ? अपने समान समझेगा ? वह एक मात्र भगवान स्वामिनारायण हैं। जो अनन्त कोटि ब्रह्मांड के अधिपति है। जिनका कोई दूसरा जोड़ा नहीं है।

सत्संग भालपाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

आरती के पदों की अद्भुत कथा

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

(गतांक से चालू)

मित्रो ! आरती की महिमा अद्भुत है । स्वामिनारायण भगवान सर्वोपरि साक्षात् परमात्मा है । इस भाव से मुक्तानंद स्वामी के हृदय से शब्द निकले हैं जो सभी के लिये अति सुखकारी एवं कल्याणकारी है । इसीलिये सम्पूर्ण समप्रदाय में यही आरती गाई जाती है । जिसे हम भावार्थ के साथ समझते हैं । गये अंक में हम वांचे कि - "पामर पतित उधार्या" सगराम जैसा एक दो नहीं "अगणित नरनारी" जिसकी कोई गिनती ही न हो सके । जेतलपुर की एक प्रसिद्ध कथा है -

श्री स्वामिनारायण भगवान एक बार जेतलपुर में यज्ञ किये उस समय सभी महिलायें सेवा करने को तैयार हो गयी । लेकिन उन्हीं महिलाओं में एक पतित महिला थी उसे हुआ कि अन्य महिलाओं की तरह हम भी इस यज्ञ में सेवा करें तो भवपार हो जाय । सभा में गेहूं पीसने की सेवा का भार लेने आयी । लेकिन कुछ ऐसे भक्त थे जिन्हे उस महिला की जाति का पता था इसलिये उसे आते देखकर जोर से चिल्लाने लगे कि इधर नहीं इधर नहीं । इतने में महाराज को आवाज सुनाई दी तो महाराजने पूछा क्या है ? महाराज यह गणिका गेहूँ पीसने के लिये लेने आयी है । इसे देना ठीक नहीं होगा । स्वभाव वश कुछ लोग स्वयं बोलते जाते हैं सामने वाले को बोलने नहीं देते । इनमें भी कुछ लोग ऐसे थे । लेकिन कुछ अच्छे थे, उन लोगो ने कहा जब महाराज विराजमान हैं तो आपलोगों को बोलने की जरुरत नहीं है । महाराजने कहा आप लोग शांत हो जांय, अब हमें बोलने दीजिये । महाराजने गेहूँ देने वालों से कहा भाई ? इस महिला को आटां पीसने हेतु गेहूँ दे दीजिये । वह महिला भले पिछड़ी जाति की थी तो भी महाराज उसे स्वीकार किये जब वह गेहूँ पीस कर ले आयी तो महाराजने उसे आशीर्वाद (वरदान) दिया कि तुम्हारा कल्याण होगा । इसी पर मुक्तानंद स्वामी ने लिखा की "पामर पतित उधार्या" ऐसे पामर, पतितों का प्रभु ने उद्धार किया । इसलिये श्री स्वामिनारायण भगवान का "पतित पावन" ऐसा कल्याण कारी नाम है ।

मित्रो ! इसके आगे की आरती के पद बोलते हैं -

"नित नित नौतम लीला करता अविनाशी ।
अड़सठ तीरथ चरणे कोटि गया काशी ॥"

हे प्रभु ! आपके चरित्र तो अपरंपार हैं । "नित नित नौतम लीला"- कभी इस भक्त के घर कभी उस भक्त के घर भावनानुसार उसके भाव की पूजा को स्वीकार करते हों, किसी का भोजन तो किसी की पूजा स्वीकारते हैं .किसी को डाटते हो तो किसी के साथ आनंद करते हो । कभी रंगोत्सव में कभी रासोत्सव, कही रामनवमी तो कहीं जन्माष्टमी के उत्सव में बहुविधलीला करते हो । जिसका स्मरण मात्र जीवात्मा का कल्याण करता है । ऐसी अनंत लीलाओं को कौन लिख सकता है।

सात समुद्र की स्याही करुं, कलम करुं बनराई ।
शेष शारदा लिखा करें, तव गुण लिखा न जाय ॥

प्रभुकी ऐसी अनंत लीलायें हैं । इसलिये स्वामी लिखते है कि "नित नित नौतम लीला करता अविनाशी अडसठ तीरथ चरणे"

हे प्रभु ? आपके चरण में वंदन करते ही ऐसा अनुभव होने लगता है कि करोडों गया-काशी तथा अडसठ तीर्थ आपके चरण में ही है । यह गुजराती भाषा का पद है । आरती की रचना में शायद हमें यह कल्पना नहीं होती कि कोटि गया काशी का मतलब क्या है ? कितने लोग तो यह मान लेते हैं कि करोड़ो बार गया-काशी जाना, लेकिन यह सम्भव कैसे हो सकता । परंतु यहाँ गया शब्द का अलग ही अर्थ होता है । जैसे काशीतीर्थ हैं ऐसे गया भी तीर्थ है । कोई इन तीर्थो की यात्रा करे लेकिन आप को भूल कर जो यह यात्रा करे वह अधूरी है । आप में एकाग्रचित्त भाव रखते हुए जो इन तीर्थो की यात्रा करता है उसे सम्पूर्ण फल मिलता है । अपने पुराणों में सच्ची भक्ति किये विना यात्रा करता है, उसे सम्पूर्ण फल नहीं मिलता । इसलिये जिसे तीर्थयात्रा का सम्पूर्ण फल चाहिये वह अपने इष्टदेव को वन्दन करके हृदय में रखकर ही यात्रा करें ।

"पुरुषोत्तम प्रगटनुं जे दर्शन करशे,
काल कर्म थी छूटी कुटुंब सहित तरसे ।"

इन पुरुषोत्तम नारायण का जो एकबार भी दर्शन करेगा उसके मोक्ष तथा उद्धार में कोई कमी नहीं आयेगी । बल्कि वह कुटुंब के साथ तर जायेगा ।

एक बहन खूब भक्तिवाली थी । प्रतिदिन मंदिर जाती थी । श्रद्धा भाव से भगवान का दर्शन करती, लेकिन उसका पति तो हिरण्याकशिपु जैसा था । पत्नी की सभी अध्यात्मिक क्रिया होजाती थी लेकिन पति तो आठ बजे तक बिस्तर छोड़ता ही नहीं था । आलसी तो इतना कि किसी पशु से कम नहीं । जीवन में कोई धर्म-कर्म, संस्कार नहीं था, मात्र खा पीकर पड़ा रहता, हाँ नौकरी को अपना फर्ज मानकर किसी तरह से जाता था । अब तो उसके जीवन में पाप का प्रवेश होने लगा । कुछ पुण्य नहीं करिये तो यमपुरी में जाना पड़ता है । लेकिन पाप करने से थोड़ी शिक्षा अवश्य मिलती है । ये सभी दृष्टांत संक्षेप में लिखा गया है । स्थिति ऐसी हुई कि एक दिन उस पति का अंतकाल आ गया, पत्नी उसके बगल में बैठकर स्वामिनारायण स्वामिनारायण मंत्र जप रही थी । पति मरते समय कह रहा था कि हमें भयंकर स्वरुप दिखाई दे रहा है, घबड़ाहट हो रही है । उस महिला ने कहा घबड़ाइये नहीं, आप ने हमारे हाथ की रोटी खाई है, मेरे हृदय में स्वामिनारायण भगवान की भक्ति है, हमारे हृदय में भगवान स्वामिनारायण बिराजमान हैं । हमारी वाणी सुनकर यमदूत यहाँ नहीं आयेंगे । आपका कल्याण होगा । जब एक पत्नी अपने पति के कल्याण के लिये ऐसा कह सकती है तो इसमें मात्र कारण यह है किवह श्रद्धा से भगवान स्वामिनारायण की भक्ति की है, भजन की है । जो श्रद्धा से भजन करता है, उसके सारे कुटुंब का उद्धार हो जाता है । हे प्रभु ! आपकी जयजयकार हो । मित्रों ! अब आरती का अंतिम पद बोलते हैं ।

"आ अवसर करुणानिधिकरुणा बहु कीधी ।
मुक्तानंद कहे मुक्ति सुगम करी दीधी प्रभु ॥"

मुक्तानदं स्वामी कहते हैं इस अवसर पर अर्थात् इस घोर कलिकाल में मोक्ष अत्यंत दुर्लभ है उसे सरल कर दिया है । जैसे अषाढी मेघ बरसता है और चारो तरफ जय जयकार हो जाती है, इसी तरह आपने आध्यात्मिक भौतिक सुख को सरल कर दिया है।

"जेने जोईये ते आ ओ मोक्ष मांगवा रे लोल....."

जो भी शरणागति करेगा उन सभी के लिये यह निर्देश है, इसमें कोई न्यूनाधिक्य का प्रश्न ही नहीं है । जैसे कोई अन्न का सदाव्रत चलाता है ठीक यही स्थिति भगवान स्वामिनारायण ने मोक्ष का व्रत चलाया है ।

निष्कुलानंद स्वामीने भी कहा है कि जैसे कोई साधन में जितनी जगह होती है उतना ही माल सामान भरता है, उससे अधिक भरना सम्भव ही नहीं है । पानी की जहाज का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि उस में जितना निश्चित रहता है उतना माल सामान भरा जाता है, फिर भी खाली था तो बाद में जो माल सामान आया उसे भरने पर भी खाली थी, जब तक भर नहीं जाय तबतक जाने नहीं देता । इसीतरह "आ अवसर करुणानिधिकरुणा बहुकीधी" भगवान स्वामिनारायण ऐसी करुणा किये "वहेती कीधी अक्षरवास पुरुषोत्तम प्रगटी रे" श्रीजी महाराज ने मोक्ष का दरवाजा खोलकर सभी शरंणागतियों के लिये मार्ग प्रशस्त कर दिया ।

मित्रों ! आरती के रचयिता मुक्तानंद स्वामी को भगवान स्वामिनारायण में दृढ निष्ठा होने से हृदय का भाव स्वत: प्रगट हो गया है । जो आज वर्तमान समय में सभी के मुख से प्रात: सायं आरती के रुप में गायी जाती है । अब आप सभी प्रतिदिन आरती गायेंगे और मंदिर जायेंगे । अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने आज्ञा की है कि प्रतिदिन सायंकाल मंदिर में जाना ।

यदि आप कहीं देश-विदेश में बाहर होंतो अपने घर में ही आरती कर लेना । इस तरह महिमा के साथ यदि आरती करेंगे तो निश्चित प्रभु प्रसन्न होगे, आपका जीवन सार्थक होगा ।

•

शांति प्रभु के चरण में

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

हे भगवान ! हे दयालु ! हे शांतिदाता ! आप हमें शांति प्रदान कीजिये । भगवान के पास ऐसी प्रार्थना करते हुए एक भक्त संत के आवास पर आता है । स्वामी को वंदन करके कहता है कि स्वामीजी ! मैं बहुत अशांत हूँ । थोड़ी भी शांति नहीं है । संसार में सर्वत्र त्रास ही त्रास है । स्वामीजी विचार करने लगे, कि इसके ऊपर कोई कर्ज नहीं । बेटे संस्कारी हैं । पत्नी चारित्र्यवाली है । सम्पूर्ण निरोगी है । फिर भी अशांति की क्यों बात करता है । इसे कैसे समझाया जाय । कुछ विचार के बाद स्वामीने कहा कि "तुम्हे शांति नहीं मिल रही है, तो ऐसा करो, एक बकरी घर में रखो, उसी का पालन करो ! अब मैं बकरी रखू, उसका पालन करूँ ? हाँ रखो तो सही ।

वह भक्त कही से एक बकरी ले आया । अभी वह घर के दरवाजे पर पहुँचा ही था कि उसकी पत्नीने कहा, अरे, यह आप क्या लेकर आ रहे हैं । इसे अपने घरमें रखना ठीक नहीं है । अरे भाई ! स्वामीजी ने कहा है । क्यों ? शांति के लिये । अब झगड़ा मत करना । उस बकरी को ज्यों छोड़ा कि सारे घर में दौड़ादौड़ी करने लगी । घर में कितनी वस्तुओं को गिरादी बाद में भोजनालय में घुस गई । सबकुछ जूठाकर दी । आधी रात में बें... बें... बें... बें... करके सभी की नींद हराम कर दी ।

सत्संग भालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

आरती के पदों की अद्भुत कथा

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

(गतांक से चालू)

मित्रो ! आरती की महिमा अद्भुत है । स्वामिनारायण भगवान सर्वोपरि साक्षात् परमात्मा है । इस भाव से मुक्तानंद स्वामी के हृदय से शब्द निकले हैं जो सभी के लिये अति सुखकारी एवं कल्याणकारी है । इसीलिये सम्पूर्ण समप्रदाय में यही आरती गाई जाती है । जिसे हम भावार्थ के साथ समझते हैं । गये अंक में हम वांचे कि - "पामर पतित उधार्या" सगराम जैसा एक दो नहीं "अगणित नरनारी" जिसकी कोई गिनती ही न हो सके । जेतलपुर की एक प्रसिद्ध कथा है -

श्री स्वामिनारायण भगवान एक बार जेतलपुर में यज्ञ किये उस समय सभी महिलायें सेवा करने को तैयार हो गयी । लेकिन उन्हीं महिलाओं में एक पतित महिला थी उसे हुआ कि अन्य महिलाओं की तरह हम भी इस यज्ञ में सेवा करें तो भवपार हो जाय । सभा में गेहूं पीसने की सेवा का भार लेने आयी । लेकिन कुछ ऐसे भक्त थे जिन्हे उस महिला की जाति का पता था इसलिये उसे आते देखकर जोर से चिल्लाने लगे कि इधर नहीं इधर नहीं । इतने में महाराज को आवाज सुनाई दी तो महाराजने पूछा क्या है ? महाराज यह गणिका गेहूँ पीसने के लिये लेने आयी है । इसे देना ठीक नहीं होगा । स्वभाव वश कुछ लोग स्वयं बोलते जाते हैं सामने वाले को बोलने नहीं देते । इनमें भी कुछ लोग ऐसे थे । लेकिन कुछ अच्छे थे, उन लोगो ने कहा जब महाराज विराजमान हैं तो आपलोगों को बोलने की जरुरत नहीं है । महाराजने कहा आप लोग शांत हो जांय, अब हमें बोलने दीजिये । महाराजने गेहूँ देने वालों से कहा भाई ? इस महिला को आटां पीसने हेतु गेहूँ दे दीजिये । वह महिला भले पिछड़ी जाति की थी तो भी महाराज उसे स्वीकार किये जब वह गेहूँ पीस कर ले आयी तो महाराजने उसे आशीर्वाद (वरदान) दिया कि तुम्हारा कल्याण होगा । इसी पर मुक्तानंद स्वामी ने लिखा की "पामर पतित उधार्या" ऐसे पामर, पतितों का प्रभु ने उद्धार किया । इसलिये श्री स्वामिनारायण भगवान का "पतित पावन" ऐसा कल्याण कारी नाम है ।

मित्रो ! इसके आगे की आरती के पद बोलते हैं -

"नित नित नौतम लीला करता अविनाशी ।
अड़सठ तीरथ चरणे कोटि गया काशी ॥"

हे प्रभु ! आपके चरित्र तो अपरंपार हैं । "नित नित नौतम लीला" - कभी इस भक्त के घर कभी उस भक्त के घर भावनानुसार उसके भाव की पूजा को स्वीकार करते हों, किसी का भोजन तो किसी की पूजा स्वीकारते हैं .किसी को डाटते हो तो किसी के साथ आनंद करते हो । कभी रंगोत्सव में कभी रासोत्सव, कही रामनवमी तो कहीं जन्माष्टमी के उत्सव में बहुविधलीला करते हो । जिसका स्मरण मात्र जीवात्मा का कल्याण करता है । ऐसी अनंत लीलाओं को कौन लिख सकता है।

सात समुद्र की स्याही करुं, कलम करुं बनराई ।
शेष शारदा लिखा करें, तव गुण लिखा न जाय ॥

प्रभुकी ऐसी अनंत लीलायें हैं । इसलिये स्वामी लिखते है कि "नित नित नौतम लीला करता अविनाशी अडसठ तीरथ चरणे"

हे प्रभु ? आपके चरण में वंदन करते ही ऐसा अनुभव होने लगता है कि करोडों गया-काशी तथा अडसठ तीर्थ आपके चरण में ही है । यह गुजराती भाषा का पद है । आरती की रचना में शायद हमें यह कल्पना नहीं होती कि कोटि गया काशी का मतलब क्या है ? कितने लोग तो यह मान लेते हैं कि करोड़ो बार गया-काशी जाना, लेकिन यह सम्भव कैसे हो सकता । परंतु यहाँ गया शब्द का अलग ही अर्थ होता है । जैसे काशीतीर्थ हैं ऐसे गया भी तीर्थ है । कोई इन तीर्थो की यात्रा करे लेकिन आप को भूल कर जो यह यात्रा करे वह अधूरी है । आप में एकाग्रचित्त भाव रखते हुए जो इन तीर्थो की यात्रा करता है उसे सम्पूर्ण फल मिलता है । अपने पुराणों में सच्ची भक्ति किये विना यात्रा करता है, उसे सम्पूर्ण फल नहीं मिलता । इसलिये जिसे तीर्थयात्रा का सम्पूर्ण फल चाहिये वह अपने इष्टदेव को वन्दन करके हृदय में रखकर ही यात्रा करें ।

"पुरुषोत्तम प्रगटनुं जे दर्शन करशे,
काल कर्म थी छूटी कुटुंब सहित तरसे ।"

इन पुरुषोत्तम नारायण का जो एकबार भी दर्शन करेगा उसके मोक्ष तथा उद्धार में कोई कमी नहीं आयेगी । बल्कि वह कुटुंब के साथ तर जायेगा ।

भक्ति सुधा

भगवान का प्रियधाम

- पटेल टीनाबहन रामाभाई (बजापुर)

गोलोक के मध्य में अक्षरधाम है। गो का अर्थ प्रकाश होता। प्रकाश का धाम। जहाँ पर करोड़ो सूर्य एक साथ उदित होते हैं। सूर्य के प्रकाश जैसा प्रकाश तो होता है लेकिन सूर्य के प्रकाश तथा यहाँ के प्रकाश में अंतर है। सूर्य के प्रकाश में कठोरता होती है, गर्मी होती है। लेकिन अक्षरधाम के प्रकाश में शीतलता होती है, दिव्यता होती है।

दूसरे धाम से लोग वापस आ जाते हैं लेकिन गोलोक धाम से कोई वापस नहीं आता है। एक सद्गृहस्थ की वात है। उसने कथा में सुना कि गाय का दान करने से वैतरणी तरजाते हैं। उसने विचार किया कि अब मैं वृद्ध हो गया हूँ, गाय का दान करते हैं। किसी ब्राह्मण से कहा हे - भूदेव ! गाय का दान करना है, आप मेरे घर चलिये। वह निर्दोष ब्राह्मण इस रहस्य को समझ नहीं पाया, गृहस्थ के घर गया, वहाँ उसके पास तीन गायें थी, जिसमें एक गाय बिमार थी, मरणासन्न थी। उसी गाय का संकल्प कर दिया। वह ब्राह्मण परेशान हो गया। इस मरणासन्न गाय को हम घर कैसे लेजायेंगे। आप जैसे भी लेजाइये। मैंने आपको दान कर दिया। वह ब्राह्मण चार पांच लोगों के सहयोग से उस गाय को अपने घर लेजाने के लिये तैयार हो गया। जाते समय रास्ते में वह गाय मर गयी। अब मरने के बाद वह गाय का दान करने वाला यमपुरीं गया। यमपुरी में इसके पुण्य का कोई लेखा जोखा नहीं था। फिर भी यमराजने कहा तुमने एक मरणासन्न गाय का दान किया है। इसलिये तीन घड़ी के लिये इस गाय से जो कहेगे वह करेगी। वह बड़ा चालाक था, तुरंत उस गाय से कहा तूं वाघ बन जा। इस यमराज को मारडाल। उस गायने वाघ का रुप लेकर ऐसा ही किया। अब वह यमराज आत्मरक्षार्थ भागने लगे, भागते भागते गोलोक धाम पहुंच गये। भगवान वहाँ विराजमान थे। पहुंचते ही समय पूर्ण हो चुका था। यमराजने कहा अब तुम्हारा समय पूर्ण हो चुका है। तब उस जीवने कहा अब आपका यह क्षेत्र नहीं है, यह तो भगवान का धाम है। यहाँ आपकी नहीं चलेगी। भगवान जो चाहेंगे वही होगा। भगवानने पूछा क्या हैं ? यमराजने कहा, यह जीव मरणासन्न गाय का एक ब्राह्मण को दान किया है। इस का पुण्य मात्र तीन घड़ी ही था। वह समय पूर्ण हो गया। भगवानने कहा लेजाइये आप इसे यमपुरी। तब वह जीव भगवान से कहा प्रभु ! आप मेरा एकनिवेदन सुन लीजिये। गीता सत्य है या नहीं ? भगवानने कहा गीता तो मेरी वाणी है। मेरी वाणी कभी झूठी नहीं हो सकती है। तो भगवान आपने ही गीता में कहा है कि जो जीव एकबार गोलोक धाम में आजाता है वह वापस नहीं जाता। मैं गोलोकधाम में आ गया हूँ अब मैं यमपुरी में जाऊँ तो गीता का श्लोक झूठा होजायेगा। गोलोक में आई हुई आत्मा कभी वापस नहीं जाती। भगवान यमराज से कहते हैं। कोई बात नहीं अभी आप जाइये, इसे यहाँ रहने दीजिये, अब यह यहीं रहेगा। यदि इसे वापस करें तो मेरा वचन व्यर्थ होजायेगा। जो गोलोकधाम में एकबार आगया वह वापस नहीं जाता। यहधाम हमें अतिप्रिय है। वहजीव भगवान का धाम प्राप्त कर लिया।

●

छपैयामें श्रीहरि के लीला चरित्र

- पटेल रेखाबहन कीर्तिकुमार (उंझा)

घनश्याम महाराज एकबार जब छोटे थे। उस समय भोजन करते हुए उनके दांत में दर्द होने लगी। अपना भोजन छोड़कर बाहर आकर हाथ धो रहे थे। उसी समय सुवासिनी भाभी पास में आकर कहने लगीं कि घनश्याम ! आपका दांत दुःख रहा हैं ? हाँ बहुत दुःख रहा है। एक दांतहिल रहा था। सुवासिनी भाभी से कहा कि आप इसे खींचकर बाहर निकाल दीजिये। वे ऐसा ही कीं। इसके बाद दूसरे दांत को वे स्वयं अपनी जीभ से हिलाकर गिरा दिये। इस तरह सभी दांत जीभ से हिला-हिलाकर गिराने लगे। अब सुवासिनी भाभी को ऐसा हुआ कि घनश्याम अभी बहुत छोटे है, सभी दांत निकल जायेंगे तो आगे क्या होगा ? उसी समय भीतर से भक्तिमाता ने आवाज दिया कि सुवासिनी वहाँ क्या कर रही हो, यहाँ सभी भोजन करने बैठे है, कुछ जरुरत किसी को हो तो ? सुवासिनी भाभीने भक्तिमाता से कहा आप यहाँ आइये, भक्तिमाता वहाँ गई, क्या है ? देखिये

घनश्यामने सभी दांत हिला-हिलाकर बाहर गिरा दिये है । माताजी घनश्याम के पास जाकर देखीं तो उनके सारे दांत थे । सुवासिनी भाभी को बडा आश्चर्य हुआ । मुंह में सभी दांत थे । बाहर टूटे पड़े भी थे । जो दांत बाहर पड़े थे उसे माताजी बाहर डालने गई तो देखा कि ये तोमोती हैं । उसी समय आकाश मार्ग से हंस आये और चंच में भरकर उड़ गये ।

घनश्याम ! यह कौन सा चरित्र है ? वे प्रसन्न होकर बोले आप सभी अन्य सामान्य मनुष्य की तरह दांत टूट कर गिर जायेंगे ? ऐसा कभी मत समझना । इसी लिए यह चरित्र किये हैं । तब सुवासिनी भाभी प्रार्थना करने लगी हे घनश्याम महाराज ? अब आपकों मै समझ गयी कि आप कोई सामान्य मनुष्य नहीं है । आप तो ईश्वर के ईश्वर पूर्ण पुरुषोत्तम अक्षराधिपति हैं ।

•

स्वयं अपने स्वरुप को देखा

- रमीला बहन के. मोदी (हिंमतनगर)

भगवान स्वतंत्र हैं । लेकिन भक्तों के आगे वे परतंत्र हो जाते हैं । भक्त के प्रेमरुपी बंधन में वे बंधजाते हैं । बलिराजा के प्रेम में बंधकर आज भी वहीं रहते हैं । स्वयं भगवान ने कहा है कि जितना हमें हमारा भक्त प्रिय है, उतना दूसरा कोई प्रिय नहीं है ।

श्रीजी महाराजने ग.प्र. २० वे वचनामृत में कहा है कि इस शरीर में रहने वाला जीव रुप-कुरुप दोनो देखता है । इसके साथ बाल, यौवन, वृद्धपना को भी देखता है । लेकिन देखने वाला स्वयं को नहीं देखता वह केवल बाह्यपदार्थों को ही देखता है । अज्ञानी जीव बाह्यजगत के पदार्थो में रचापचा रहता है । सभी इन्द्रियों के सुख की चाहना करता रहता है । श्रोत्र, त्वक्, रसना, ध्राण इत्यादि पांच ज्ञानेन्द्रिय तथा पांच कर्मेन्द्रियों के द्वारा विषय सुख की चाहना करता रहता है । लेकिन वह स्वयं का सुखनहीं भोगता । कारण यह कि उसके चारो तरफ अज्ञान का वातावरण फैला हुआ है । जिससे प्रभावित होकर आत्मचिंतन नहीं कर पाता बाह्य जगत के विषयों में मन लगाकर विषयाशक्त हो जाता है ।

इसी बात पर शुकानंद स्वामीने शंका की कि अपना स्वरुप तो अपने हाथ में होता है ? तब श्रीजी महाराज ने कहा कि जो सत्संग किया हो वही अपने स्वरुप को पहचान सकता है । यह आत्म चिंतन का विषय है । अभ्यास द्वारा यह संभव है । अभ्यास से आत्मदर्शन कर सकता है । इस बार-बार अभ्यास से परमात्मा का दर्शन होने लगेगा । इसलिये प्रकाशरुप ब्रह्म होकर भगवान की मूर्ति अपने हृदय में उतारकर ध्यान करे तो निश्चित ही शि.प. श्लो. ११६ में कहे अनुसार आत्माका परमात्मा के साथ साक्षात्कार हो सकता है ।

श्रीजी महाराज का सिद्धांत है कि अखंड भाव से भगवान को अन्तर्हृदय में उतारने का अभ्यास करना चाहिये । संत के साथ सत्संग करके सतत उन्हीं के वचन में विश्वास करके परमेश्वर के स्वरुप का ध्यान करे तो कारण शरीर नष्ट हो जाता हैं और अंतर में प्रकाश हो जाता है । जैसे इमली के बीज को आग में सेका जाय तो ऊपर का भाग हाथ से मसलने पर अलग हो जाता है । इसी तरह भगवान का ध्यान करते रहने से बाह्य जगत का व्यवहार नष्ट हो जाता है, कारण शरीर नष्ट हो जाता है, अज्ञान का नाश हो जाता है । फिर अंतर में प्रकाश का उदय होता है ।

सूरदास जन्मांधथे । भगवानने उनका हाथ पकड़ा और छोड़ भी दिया । तब सूरदास ने कहा -

बांह छोड़ाकर चले गये अंधाजानकर मोंह ।
पर हृदय में से जाओं तो मरद जानूं तोंय ॥

यह सुनकर भगवानने उन्हें दर्शन दिया । बाद में अंतर्धान हो गये । आचार्य रघुवीरजी महाराजने कहा कि यदि नींद आती हो तो आने देना चाहिये । लेकिन नींद का आग्रह नहीं करना चाहिये ।

अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री वारंवार सभा में कहते हैं कि शिक्षापत्री के अनुसार यदि व्यवहार करेंगे तो अन्य कुछ करने की जरुरत नहीं है ।

•

शुष्क ज्ञानी की वात क्यों नही सुननी चाहिये

- कोटक वर्षा नटवरलाल (घोड़ासर)

ग.म. के १९ वें वचनामृत में महाराज ने बताया कि शुष्कवेदांती की बात नहीं सुनना चाहिये । अर्थात् जिस की वाणी सूखी हो नीरस हो, जिसकी बात सुनकर भगवान की उपासना का खंडन हो तथा हृदय में साम्यता की स्थिति हो जाती है । साम्यता का मतलब सभी में परमात्मा का वास है, ऐसा जानकर समभाव (साम्यता) का व्यवहार करता है । ऐसे केवल आत्म निष्ठावाले कैवल्यार्थी तो केवल ब्रह्म संतो को पाते हैं । उन्हीं के संबन्धसे अन्य देवों की उपासना भी हो जाती है । इसीलिये शुष्कवेदांती की वात नही सुननी चाहिये । जो इनकी वाणी सुनता है उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है । महाराज शुष्कवेदांती के मत को जानने के लिये शास्त्र का श्रवण किये

तो भी उदासीनता ही हाथ लगी। शोकमग्न हो गये और किसी से बात नहीं करते थे, नहीं किसी की तरफ देखते थे। मात्र आंखों में से अश्रुजलधारा बहती थी। जब यह स्थिति श्रीहरि की हो सकती है तो सामान्य व्यक्ति की क्या बात है। बाद में श्रीजी महाराज ने धर्म तथा भक्ति द्वारा अपने इष्टदेव श्रीकृष्ण भगवान को प्राप्त करने की बात सभी को समझाने के लिये एक पत्र लिखा, जो वचनामृत में उद्धत है - जिसे यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

''उपासना'' अर्थात् ''उप+आस'' इस धातु से निष्पन्न है। उप अर्थात् 'समीप' में तथा आस अर्थात् ''बैठना''। पर ब्रहम परमात्मा के समीप में बैठना, उन्हीं की सेवा करना ऐसा अर्थ होता है। ब्रह्मनिष्ठ एकांतिक भक्तों। उपासना भी दो प्रकार की होती है। एक प्रत्यक्ष उपासना (दृढ उपासना) तथा दूसरी परोक्ष उपासना (सामान्य)। ''परोक्ष उपासना'' ''प्रत्यक्ष उपासना'' की प्राप्ति के लिये संस्कार की प्रथम आवश्यकता है। परंतु स.गु. मुक्तानंद स्वामी ने लिखा है की -

''परोक्ष की भवतनो पार आवे नहीं''

''प्रगट उपासना सबसे मोटी''

परोक्ष उपासना से इसी जन्म में भवपार सम्भव नहीं है। परोक्ष अव्यक्त उपासना में क्लेश अधिक, प्राप्ति शून्यवत् रहती है। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि-

इन्द्रियों से अंत:करण में अगोचर - अव्यक्त ऐसे उपास्य स्वरुप में आसक्त चित्तवाले को अधिक क्लेश करना पड़ता है। क्योंकि देह धारियों को अंतकाल में दु:खपूर्वक अव्यक्त गति प्राप्त होती है।(गी.अं. १२ श्लो. ५)

पृष्ठ ०४ का चालु...

किये।

- पिता के अत्याचार से तथा विरोधके कारण प्रहलादजी कि भक्ति दृढ हुई थी।
- जूनागढ के महान भक्तराज नरसैया की भाभी ने भगवान के नाम में तन्मयबना दिया।
- बाण विद्या सीखने की इच्छा वाले एकलव्य की गुरुद्रोण से उपेक्षा होने के कारण वह महान धनुर्धर बन गया।

इससे यह स्पष्ट होता है कि आध्यात्म मार्ग में चलने वाले के जीवन में एकवार ऐसा आता है कि भगवान के सिवाय हमारे जीवन में कोई नहीं है। ऐसा समय ही मानव के जीवन में परिवर्तन लाता है। सच्चे साधना की यहीं से शुरुआत होती है।

हमें विचार करना है कि सर्वोपरि भगवान द्वारा स्थापित मंदिर (देव), अपर स्वरुप आचार्य महाराजश्री, लिखामि सहजानंद के नियम से लिखे गये शास्त्र जब हमारे पास है तो निराश होने की कोई जरुरत नहीं है। अपने पास थोडा भी प्रकाश होगा तो सत्संग की, समाज की तथा व्यक्तिगत जीवन की यात्रा पूर्ण हो जायेगी। चाहे कितना बड़ा शक्तिशाली या शूरवीर हो वह एक साथ एक ही काम कर सकता है बहुत नही कर सकता। (एक साथे सब सधे सब साधे सब जाय)। आज का युवावर्ग विषय - व्यसन तथा देखादेखी का अन्धानुकरण कर रहा है। व्यसन का प्रारंभ प्रात: कालीन सूर्य के समान भले सुहाना होता है लेकिन मध्याहन के बाद अस्त होने तक स्वस्वरुप को खो देता है। ऐसे अंधकारमय जीवन में कुछ दिखाई नहीं देता है। इसलिये हे युवानो ? मार्ग में आनेवाले अवरोधों को दूर करने का एक मात्र साधन है ईश्वर भक्ति, श्रद्धा, धर्म, नियम तथा ईश्वर की महिमा में अटूट विश्वास। सत्संग में अनेकजीवात्मा एक-एक पग परमात्मा की तरफ गति करके धाम तक पहुँच सकते हैं।

हमारे पूज्यपाद ध.धु. आचार्य महाराजश्री से तथा संतो से आज्ञा प्राप्त कर उपासना को दृढ करके धर्म, नियम का पालन करते हुए सत्संग के विकासमार्ग पर अग्रसर हो सकते है।

एक ही अनाज का बीज सारी पृथ्वी को हरियाली से आच्छादित कर सकता है। इसी तरह एक युवान, युवक मंडल, सत्संग मंडल रुपी एक बीज ही लाखों भटके हुए मुमुक्षुओं को प्रकाश दे सकता है। कारण यह कि एक अनेक का रुप लेकर असंख्य लोगों में ज्योति जगा सकता है। जैसे एक दीपक से इक्कीस दीपक तथा इक्कीस लाख दीपक जल उठते है। इसी तरह सत्संग रुपी दीपक भी सारे जगत को प्रकाशित कर सकता है।

हम एकांतिक या परम एकांतिक भले न बन सके, जगत में जगमगाता सूर्य या महासूर्य बन जाय तो निश्चित ही सत्संग मंडलरुपी प्रकाश फैल सकता है। प्रत्येक सत्संगी के घर में, गाँव में, सारे विश्व में प्रकाश फैलाने वाले सशक्त मनुष्य की आवश्यकता है। क्योंकि अंधकार चाहे जितना विशाल एवं शक्तिशाली हो पर प्रकाश के सामने टिक नहीं पाता है। इस तरह समाज में तथा सत्संग में अज्ञान रुपी अंधकार उत्तरोत्तर बढता ही जा रहा है, अत: इसका प्रतिकार करने के लिये प्रत्येक नवयुवान को सत्संग मंडल की सभा में जुड़जाना आवश्यक है।

प्रश्न पेटी

साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ भगवान की मूर्ति में जिसकी अखंडवृत्ति रहती है। वह जीव, ईश्वर, माया तथा ब्रह्म के स्वरुप को यदि चाहे तो तत्काल दर्शन कर सकता है। तथा वैकुंठ, गोलोक तथा ब्रह्ममहल इत्यादि जो भगवान के धाम हैं उसका भी दर्शन कर सकता है - इस उक्ति का प्रवक्ता कौन ?

प्रश्न : २ में मूर्तियो स्थापित जेह स्थाने, जे तेहने आदरथी न माने।
न जाणवो आश्रित ते अमारो, ते तो मरीने नरके जनारो ॥
हरिलीलामृत में किस कडवे में यह वात किसने कही है ?

प्रश्न : ३ ध्यान का तो अपार फल है। एक पल मात्र भी एक सूरत का ध्यान करे तो कोटिब्रह्मांडकी संपत्ति को प्राप्त करता है, इसकी अपेक्षा ध्यान का फल अधिक है। यह किस शास्त्र में स.गु. आधारानंद स्वामीने पूछा है तथा पूर या तंत्र में हैं ?

प्रश्न : ४ अक्षरधाम के अधिपति पूर्ण पुरुषोत्तम स्वामिनारायण भगवानने समाधिप्रकरण किस प्रकरण में चलाये थे ? तथा किस गाँव से प्रारम्भ किये थे ?

प्रश्न : ५ श्रीहरिने स्वधामबाद सर्व प्रथम किस दिन किस हरिभक्तने अपनी देह का त्याग किया था ?

प्रश्न : ६ पातलिये हर्या प्राण रे, बेनी मारी.... पातलिये हर्या प्राण तूं।
इस पद को गाते गाते स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी को क्या अनुभूति हुई थी ?

प्रश्न : ७ स्वपरद्रोह जननं सत्यं भाष्यं न कर्हिचित्।
कृतघ्न संगस्त्यक्तव्यो लुब्धा ग्राह्या न कस्यचित् ॥
गुजराती अर्थ में समझाईये।

जून२००८ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम।

(१) पर्वतभाई पूजा करते करते भगवान के अवतारों में नृसिंह अवतारण का संकल्प हुआ कि भगवान कैसे होंगे। भगवानने २४ अवतारों का दर्शन कराया। (२) स.गु. कवि राज प्रेमानंद स्वामी। (३) प्रेमानंद स्वामी कहते हैं कि "प्रेमी भक्त विन्ती करे दौडी दौडी लोह चुंबक तुल्य वृत्ति मुरतीमां जोडी नथी जाती दरबार मांथी घोड़ी....." (४) सम्वत १९०२ चैत्र शुकल् नवमी के दिन पूर्ण हुआ। जिस में दो सोरठ, दो दोहा, ४८ कडवा, ११ पद तथा अंत में एक घोड़ है। (५) मन के रोग को सत्संग हरता है। (६) भगवान के साथ एकात्मभाव प्राप्त होते हुए भी मनुष्य तथा दैवादिक जीव ध्यान करने योग्य नहीं हैं। (७) १. अहमदाबाद, २. भुज, ३. वड़ताल, ४. धोलेरा, ५. जूनागढ, ६. गढपुर, ७. जेतलपुर, ८. मूली, ९. धोलका।

१. गोरधनभाई वी. सीतापरा - बापूनगर
२. वीणाबहन आर. भावसार - नवरंगपुरा
३. अरविंदाबहन आर. भावसार - चांदलोडिया
४. दक्षाबहन घनश्यामभाई सोनी - अहमदाबाद
५. हसुमतीबहन ठक्कर - इसनपुर
६. गीता बाबूभाई काछडिया - बापूनगर
७. श्री स्वामिनारायण मंदिर - हर्षदकोलोनी
८. अंजनाबहन मनुभाई पटेल - नांदोल
९. कैलाशबहन विष्णुभाई पटेल - नांदोल
१०. साकरबहन नटवरलाल पटेल - नांदोल
११. शारदाबहन कांतिभाई पटेल - नांदोल
१२. विरल, किण, संदीप, गीता, प्रवीणभाई भोलाभाई पटेल - राजपुरवाला
१३. हर्षद, अमित बाबूलाल कानदास - कोठा
१४. ज्योत्सनाबहन राजूभाई पटेल - आनंदपुरा
१५. भक्तिभाई भोलाभाई पटेल - राणीप
१६. गंगाबहन भक्तिभाई पटेल - झुलासण
१७. शिल्पाबहन मणीलाल पटेल - दहेगाँव
१८. माणेकबहन मणीलाल पटेल - दहेगाँव
१९. दक्षाबहन कीर्तिभाई सोनी - अहमदाबाद

२०. माधवजीभाई हरखजीभाई आद्रोजा - मोरबी
२१. कंचनबहन बाबूभाई पटेल - रतनपर
२२. भावना कमलेशकुमार खंधडिया - मोरबी
२३. रेखाबहन कीर्तिकुमार पटेल - ऊँझा
२४. महंत शा. विजयप्रकाशदास - प्रभु हनुमानजी जमीयतपुरा
२५. गोरधनभाई शंकरदास पटेल - सोजा
२६. अमृतलाल के. मोदी - सोजा
२७. करशनभाई जोईताराम पटेल - कोठा
२८. सुभद्राबहन रमेशभाई पटेल - कनीपुर
२९. हंसाबहन ईश्वरभाई पटेल - सापावाड़ा
३०. हार्द, हेली, किरीटभाई पटेल - नरोडा
३१. सांख्ययोगी रेखाबा, रसीलाबा - हवेली स्वा. मंदिर कालुपुर
३२. नानीबहन, अल्काबहन अश्विनभाई पटेल - विराटनगर
३३. बी.पी. भावसार - एप्रचो-बापुनगर
३४. सुमित्राबहन नरेशकुमार भावसार - विसनगर
३५. विनोद पी. पटेल - वहेलालवाला
३६. साधु चैतन्यदास - वहेलाल
३७. विष्णुभाई जीवाभाई पटेल - सीतापुर
३८. भगवानजीभाई वेलजीभाई सोनी - मोरबी
३९. मफाजी सरदारजी डाभी - डांगरवा
४०. चंद्रिकाबहन एस. टांक - जीरागढ
४१. ईलाबहन विपीनभाई का.प. - गोधरा
४२. चंद्रिकाबहन इन्द्रवदनभाई का.प. - गोधरा
४३. हरगोवनभाई चतुरदास पटेल - मोटप
४४. देवीबहन हीरालाल दबासीया - मीरजापुर-कच्छ

पृष्ठ ९ का चालु...

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री : उत्सव हो या मंदिर का निर्माण कार्य हो अथवा कोई भी सत्कर्म हो समर्पित भाव से किया जाय तो प्रत्यक्ष रुप से महाराज उसे स्वीकार करते हैं। सुख आवे या दुःख किसी भी परिस्थिति में सत्संग की समझ, महाराज में निश्चय का भाव सदा एक समान रहना चाहिये।

ता. २४-३-०८ फाल्गुन शुक्ल-८ को बापूनगर (एप्रोच) मंदिर के तृतीय पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री : थोड़े समय पहले एक लेख वांचे कि एक भिखारी मर गया जिसके पास एक लाख रुपये मिले। विचार करने से ख्याल आयेगा कि भिखारी पैसों का सदुपयोग कर ही नही सका और अंत आगया। पैसे का सुख उसे नहीं मिला। इसी तरह हमें महाराज तथा संत एवं शास्त्र तो मिले हैं, लेकिन हम उनका सुख प्राप्त नहीं कर पाते हैं। सुख प्राप्त करने की तरकीब आनी चाहिये। यदि सुख नहीं ले सके तो जो मिला है वह सब व्यर्थ ही समझना चाहिये ? आप सभी के सहयोग से निर्गुणदासजी स्वामी तथा लक्ष्मणजीवनदासजी स्वामी ने इतना सुंदर मंदिर बनवा दिया है इसलिये प्रतिदिन घनश्याम महाराज के दर्शन का सुख अवश्य लीजियेगा। हम बड़े भाग्यशाली हैं कि हमें घर आंगन में इतनी बड़ी निधिमिल गयी है। हमें जो प्राप्त हुआ है वह जगत में कही भी नहीं है। इसलिये अहोभाग्य समझकर सुख का आनंद लेते रहिये।

पृष्ठ ६ का चालु...

शरणागति स्वीकार करलें तो अवश्य अपने गन्तव्य स्थान (अक्षरधाम) को विना परिश्रम के पहुँचा जा सकता है।

क्योंकि आज तक अपने अंदर अज्ञानरुपी अंधकार था। परंतु जबसे महाराजश्री जैसे गुरु मिले है तब दिव्यतारुपी प्रकाश प्राप्त हुआ है। यदि एक ही सूर्य से अंधकार नष्ट हो सकता है तो अपने महाराजश्री करोड़ो सूर्य के समान है। इसीलिए हम सभी को निश्चिंत रहना चाहिये, क्योकि हम सभी को यह खबर है कि महाराजश्री की शरणागति से अज्ञानरुपी अंधकार दूर हो जायेगा। सच्चे अर्थ में गुरु शब्द की व्याख्या यह है कि "गु" = अंधकार, "रु" = नाश करने वाला। जो मोहरुपी अंधकार को नष्ट करे उसे ही गुरु कहते हैं। यदि गुरु एकबार जिस शिष्य को प्रेम से स्वीकार करले तो उसका बेड़ा पार हो जाता है। चिंतामणि, कल्पवृक्ष, कामधेनु ए तीनो वस्तुये व्यक्ति जो चाहे वह प्राप्त कर सकता है। लेकिन अलौकिक कामना जब हो या मुक्ति की प्यास जब लगे तब इस त्रिपुटी की मनोकामना एकमात्र गुरु की शरणागति से हो सकती है। क्योंकि गुरु त्रिपुटी से श्रेष्ठ है। तीनो इस जीवात्मा को संत्य का ज्ञान देकर परमात्मा के मार्ग पर ले जाने वाला गुरु होता है। ऐसा जानने मे मिला है कि सच्चे गुरु का यह लक्षण नहीं कि मुमुक्षु को परमात्मा की तरफ नहीं बल्कि अपनी तरफ खींचता है। ऐसा करनेवाला गुरु-शिष्य दोनो अधोगति को प्राप्त होते हैं। सच्चे गुरु का काम केवल जीव को शिव के साथ, गोविन्द के साथ मिलाने का है। हम सभी के भाग्य का पार नहीं है। स्वयं श्रीजी महाराज हम सभी के लिये धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री को गुरु के रुप में देकर शिष्यों के कल्याण का मार्ग खोलदिया है।

सत्संग समाचार

जेष्ठ शुक्ल-१५ को श्री नरनारायणदेव तथा बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का केसर स्नान दर्शन

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में विराजमान भरतखंड के अधिष्ठाता श्री नरनारायणदेव तथा बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का ज्येष्ठ शुक्ल-१५ के शुभ मंगल दिन प्रातः ६-३० बजे षोडशोपचार केसर स्नान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग पर हजारों संत हरिभक्त दर्शन के लिये पधारे थे । मंदिर में भीड़ समा नहीं रही थी । सतत डेढ महीने तक चन्दन का अलौकिकलेप असह्य गर्मी में शीतलता बनी रहे इसके लिये सम्पूर्ण दिन लगा रहता था । इस चन्दन का सुन्दर कलात्मक ढंग से लेपकर के संवारा जाता था । जिसका दर्शन करके भक्तजन आनंदित होते थे । श्री नरनारायणदेवादि का केसर स्नान पूर्ण होने के बाद अक्षरभुवन में बाल स्वरुप घनश्याममहाराज का प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने अपने वरद् हाथों से केसर स्नान षोडशोपचार विधिसे सम्पन्न किया था । जीवन में ऐसा दर्शन जिसने किया उसके भाग्य की कोई सीमा नहीं हैं । पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से इस प्रसंग के मुख्य यजमान विमल प्लास्टवाला श्री अमृतभाई एन. पटेल परिवार तथा सह यजमान डॉ. मनोजभाई जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट परिवार (डिट्रोईटवाला) था ।

गाँव गाँव से पधारे हुए हरिभक्तों ने केसर स्नान का अलौकिक दर्शन करके धन्यता का अनुभव किया ।

इस अवसर पर श्री स्वामिनारायण महामंत्र लेखन कार्य जिन श्रद्धालुओं के द्वारा किया गया था उसका पुरःश्चरण प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से विद्वान पंडितो द्वारा पूजन विधिकी गई थी । *- रामानुज स्वा. कोठारी*

कांकरिया मंदिर में मारुति यज्ञ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से तीर्थ भूमि कांकरिया मंदिर में पूज्य आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजने जिन बाल स्वरुप कष्टभंजन देव को प्रतिष्ठित किया था, उन्हीं का चैत्र शुक्ल-१५ के दिन भव्य मारुति यज्ञ का धूमधाम से आयोजन किया गया था । पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारकर श्रीफलका होम करके पूर्णाहुति की थी । अंत में समस्त सभा को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । सभा संचालन शा. यज्ञप्रकाशने किया था । *- पा. नरोत्तम भगत*

श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा उनावा मंदिर के महंत स्वामी एवं कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी गुरुप्रसादसजी तथा महंत स्वा. आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्री बाबूभाई कचराभाई पटेल परिवार की तरफ से पाटोत्सव का आयोजन किया गया था । इस प्रसंग पर श्रीमद् सत्संगिजीवन को त्रिदिनात्मक कथा शा. यज्ञप्रकाशदासजी के वक्तापद पर हुई थी । वैशाख शुक्ल-३ अक्षय तृतीया के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से श्रीराधाकृष्णदेव का पाटोत्सव अभिषेक षोडशोपचार विधिसे किया गया था । इसके बाद अन्नकूट दर्शन एवं प्रासंगिक सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से कथा की पूर्णाहुति की गयी थी । अंत में हार्दिक आशीर्वाद दिये थे ।

- महंत स्वामी हरिप्रकाशदास, उनावा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से एप्रोच मंदिर के कोठारी अशोकभाई पटेल तथा हरिभक्तों के सहयोग से यहाँ के मंदिर में पाटोत्सव धूमधाम से सम्पन्न किया गया । इस प्रसंग पर श्रीमद् भागवत कथा कांकरिया के को.शा. यज्ञप्रकाशदासजी के वक्ता पद पर सम्पन्न हुई थी ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का पाटोत्सव तथा अन्नकूट आरती धूमधाम से सम्पन्न हुई थी । प्रासंगिक सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव का दृढ आश्रय रखने के लिये हरिभक्तों को सिफारिश की थी । इस प्रसंग पर स.गु.शा.स्वा. निर्गुणदासजी आदि संत पधारे थें । *- अशोकभाई पटेल*

मथुरा मंदिर में पाटोत्सव एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री दर्शनार्थे आये

यहाँ के मथुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री राधाकृष्णदेव का पाटोत्सव श्री

सुनीलकुमार वसंतराय सोनी तथा रीटाबहन सुनीलकुमार सोनी के यजमान पद पर धूमधाम से सम्पन्न हुआ था।

ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट तथा महापूजा विधिधूमधाम से हुई। सभी हरिभक्त दर्शनकरके धन्य हो गये।

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर मथुरा में अहमदाबाद से श्री नरनारायणदेव पीठ की पूज्या अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी तथा भावि आचार्य पूज्य लालजी महाराजश्री तथा पू. श्रीराजा दर्शनार्थ पधारी थी। सतत दो दिन तक दर्शनका अलौकिक लाभ दी थी। बहुत सारी बहनोंने प.पू. गादीवालाजी से गुरु मंत्र तथा कंठी धारण की थी। तथा सभी बहनो को हार्दिक आशीर्वाद दी थी। साथ में सां.यो. बहने भी पधारी थी। बामरोली से पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री भी दर्शनार्थ पधारे थे। सभी संत-हरिभक्तोंने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का दर्शन करके धन्यता का अनुभव किया था।

- विष्णुकुमार रावल

श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रांतिज में १२१ वाँ पाटोत्सव सम्पन्न

सर्वावतारी श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा पू. लालजी महाराजश्री की कृपा और आशीर्वाद से तथा अ.नि. पू. गवैया स्वामी की दिव्य प्रेरणा से उन्हीं के शिष्य माधवप्रसाददासजी (महंत) के मार्गदर्शन से प्रांतिज मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्ण देव का १२१ वाँ पाटोत्सव श्री कौशिकभाई दामदोरदास पंड्या परिवार के यजमान पद पर जेठ शुक्ल-२ ता. ५-६-०८ के दिन धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग पर श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण नव युवान वक्ता शा.स्वा. धर्मकिशोरदास गुरु महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी ने सुमधुर शैली में कथामृतका अलौकिक रसपान कराया।

ता. २-६-०८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। ठाकुरजी की आरती उतारकर नवनिर्मित भक्ति हाल तथा हरिभक्तों के गेस्ट हाउस का उद्घाटन किये थे। इस के बाद सभा में पधारे थे। यजमान श्री कौशिकभाई पंड्या परिवारने पूजन-अर्चन-आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। अंत में हरिभक्तों को हार्दिक आशीर्वाद देकर प्रसन्न किये थे।

अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी तथा जेतलपुर के पू. पी.पी. स्वामी पधारे थे। अपनी प्रेरकवाणी का सभी हरिभक्तों को लाभ दिये थे। सभा संचालन स्वामी वंदनप्रकाशने किया था। इस प्रसंग पर महंत स्वामी तथा संत मंडल, ट्रस्टी मंडल, कोठारी हरिभाई मोदी तथा श्री नरनारायण युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी।

यहाँ बहनो के मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर महापूजा का आयोजन किया गया था। जिसकी पूर्णाहुति की आरती प.पू.अ.सौ. गादीवालाने किया था। समस्त बहनों को हार्दिक आशीर्वाद दी थी। आशीर्वाद का लाभ प्राप्त कर कें बहने खूब प्रसन्न हुई थी। बहनो ने अहमदाबाद मंदिर की हवेली में सुखशैया की थी।

- को. हरिकृष्ण मोदी

एप्रोच बापुनगर मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से ज्येष्ठ सुद-१० को श्रीहरि अंतर्धान तिथि के निमित पर सुबह ८ से ११ तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून की गयी थी।

- गोरधनभाई वी. सीतापरा

हर्षद कोलोनी मंदिर (बहनो का)

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से पूजारी रणीयतबा की प्रेरणा से ज्येष्ठ सुद-१० श्रीहरि अंतर्धान तिथी के दिन दोपहर में १२ से ६ तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून की गयी थी। हर अमावस्या को १२ घंटे तक धून की जाती है।

- गोरधनभाई सीतापरा

बामरोली (मध्यप्रदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव

ग्वालियर के पास मुरेना जिला के चंबल नदी के किनारे बामरोली गाँव में आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की कृपा आशीर्वाद से भव्य मंदिर निर्माण हुआ है, जहाँ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपगादीवालाश्री के शुभ आशीर्वाद से तथा यहाँ के महंत स्वामी लक्ष्मीनारायणस्वरुपदासजी की प्रेरणा से सां. कोकीलाबा (सुरेन्दनगर) की तरफ से पाटोत्सव का आयोजन किया गया था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ने श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक वेद विधिपूर्वक अपने वरद् हाथों से किया था। इसके बाद प्रासंगिक सभा में यजमान परिवार के भाई तथा श्री कानजीबापा (सामत्रा कच्छ) इत्यादि सभी ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का तथा प.पू. लालजी महाराजका पूजन अर्चन करके, आरती उतारकरआशीर्वाद प्राप्त किया था।

शा. छपैयाप्रसाददासजी, पूजारी वासुदेव स्वामी, महंत शा. लक्ष्मीनारायणदासजी तथा मथुरा के महंत आनंद स्वामीने प्रासंगोचित प्रवचन किया। अंत में यजमान परिवार तथा

हरिभक्तों को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। स्थानिक हरिभक्तों को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने गुरुमंत्र दिया। बहनों को प.पू. गादीवालाजीने गुरुमंत्र दिया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ वी.पी. स्वामी सेवा में थे। *- शा. छपैयाप्रसाददास*

इडर परगणाना पुराने अरोडा गाँव में पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से साबरकांठा के पुराने अरोडा स्वामिनारायण मंदिर का दूसरा पाटोत्सव महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री विशेषरुप से पदार्पण करके ठाकुरजी का अभिषेक आरती करके सभा में विराजमान हुए थे। बाद में हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। पाटोत्सव के यजमान श्री कचराभाई सांकाभाई पटेलने पू. महाराजश्री तथा संतो को प्रसन्नता प्राप्त किये थे। को. एस.एस. स्वामीने उत्सव में खूब परिश्रम किया था। *- कपिल सोनी ईडर*

श्री स्वामिनारायण मंदिर डीसा मे पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से बनासकांठा के डीसा श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर सिद्धपुर मंदिर से पधारे संत एस.एस. स्वामी दिव्यस्वरुप स्वामी तथा भक्तिनन्दन स्वामीने ठाकुरजी की आरती अन्नकूट दर्शन-समूह महापूजा इत्यादि कार्यक्रम किया था। वहाँ पर प्रति रविवार को बाल मंडल तथा युवा मंडल सत्संग सभा का आयोजन होता है। *- श्री नरनारायण युवक मंडल, डीसा*

पू. लालजी महाराजश्रीने बोपल के बच्चो के साथ सत्संग के अभ्युदय के लिए क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया

हमारे भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री अभी से ही भावि पेढी को सत्संग में ओतप्रोत करने हेतु विविधआयोजन कर रहे हैं। जिस में आयोजन की तैयारी कर रहे हैं।

ता. १-६-०८ के दिन सायन्स सीटी के पास मारुतिनंदन फार्म के ग्राउन्ड में प.पू. लालजी महाराजश्रीने क्रिकेट मैच का आयोजन किया था। जिस में बोपल बाल मंडल की टीम के सामने विजय प्राप्त किया था। इस प्रसंग पर शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजीने पू. लालजी महाराजश्री को विजयकप प्रदान करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे।

प.पू. बड़े महाराजश्रीने भी यहाँ खास पधारकर प.पू. लालजी महाराजश्री को क्रिकेट मैच की फोटोग्राफी दे कर पू. लालजी महाराजश्री को तथा सत्संगी बालको को प्रोत्साहित किया था। इस प्रसग पर हमारे हरिभक्तों ने सेवा करके प.पू. लालजी महाराजश्री को प्रसन्न किया था।

ज्येष्ठ सुद-१० सर्वावतारी श्रीजी महाराज की अंतर्धान तिथि निमित्त पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से यहाँ के महंत शा. हरिवल्लभदासजी की प्रेरणा से धून-भजन कीर्तन के साथ अंतर्धान लीला की कथा का श्रवण किया था।

इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे तथा ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में बिराजमान हुए थे। सभा में शा.स्वामी धर्मवल्लभदासजीने श्रीहरि की लीला का सुंदर वर्णन किया था।

अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी स्कीम कमिटी के सभ्य प.भ. रतिभाई खीमजीभाई पटेल का पूर्ण परिवार उपस्थित था।

बाल मंडल के बालकोने भी सुंदर सत्संग की बाते करके प.पू. महाराजश्री को प्रसन्न किया था। इस प्रसंग के यजमान प्रो. श्री के.आर. पटेल तथा अन्य हरिभक्तों की सेवा प्रेरणारुप थी।

- प्रविणभाई उपाध्याय

नये वाडज श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रीहरि की १७८ वी अंतर्धान तिथि निमित्त पर प्रातः ७ से शाम के ७ बजे तक १२ घंटे की अखंड महामंत्र धून, भक्त चिंतामणी के पाठ आदि सुंदर कार्यक्रमो का आयोजन किया गया था। पूर्णाहुति की आरती बहनो ने उतारी थी। *- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल*

श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार में पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ-आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी व्रजवल्लदासजी की प्रेरणा से पवित्र भागीरथी-गंगाजी के किनारे स्थिर श्री स्वामिनारायण मंदिर में वैशाख सुद-१५ पूनम को ठाकुरजी के पाटोत्सव-अभिषेक प्रसंग पर गंगाजी की जलयात्रा व मितलघाट से श्री स्वामिनारायण मंदिर तक धूमधाम से पहुंची। श्रीजी महाराज की भजन-कीर्तन-धुन की गई थी। बाद में ठाकुरजी को पंचामृत से महाभिषेक षोडशोपचार पूर्वक किया गया था। श्री हितेन्द्रभाई आर. पटेल तथा यजमान परिवार हेमलताबहन सुरेशभाई पटेल तथा दीपल पटेल सेवा का लाभ लिये थे। इस प्रसंग पर को. सुव्रत स्वामी, पुजारी हरिनंदनदास तथा पार्षद महेन्द्र भगत ने उत्तम सेवा की थी। सभी भक्तों ने अन्नकूट का दर्शन करके महालाभ लिया था।

- नरेन्द्र भगत गु.शा.स्वा. अखिलेश्वर दासजी

विसनगर

यहाँ श्री नरनारायणदेव युवक मंडल विसनगर द्वारा समग्र दंढाव्य देश क्रिकेट टुर्नामेन्ट का आयोजन विसनगर में ता. ३-४-०८ मई को किया गया था। जिस में २८ टीमो ने भाग लिया था। फाईनल मैंच ता. १० तथा ११ मई ०८ के दिन कुकरवाडा तथा वसई के युवक मंडल के बीच में हुई थी। जिस में कुकरवाडा टीम की विजय हुई थी। ऐसे खेल कूद का आयोजन अपने सत्संग युवकों में एकता लाने के लिये किया जाता है। जिससे सभी एक बनकर रहें।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने विजेता टीम को अन्तर का आशीर्वाद दिया था।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, विसनगर

खोरज डाभी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से दंढाव्य प्रदेश के खोरज तथा करजीसण गाँव में १२ घंटे की महामंत्र धून की गई थी। जिस में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल इन्द्रपुरा के मंडलने धुन की थी। लींबडी के साधु भक्तवत्सलदास आदि संतमंडलने भगवान संबंधी लीला चरित्र तथा धर्मकुल की महिमा बताकर तथा ठाकुरजी की आरती उतारकर धुन की पूर्णाहुति की थी।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, विसनगर

श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण में सेवा व्रतधारी

प.पू. बड़े महाराजश्री का दिव्य संकल्प "श्री स्वामिनारायण म्युझियम" का निर्माण कार्य जब से प्रारम्भ हुआ तब से संप्रदाय के श्री नरनारायणदेव तथा धर्मवंशी प.पू. आचार्य महाराजश्री में अनन्य निष्ठा वाले हरिभक्त श्री स्वामिनारायण म्युझियम में येनकेन प्रकारेण कीमती योगदान दे रहे हैं। जिसने अपने व्यवहार की अपेक्षा श्रीहरि के इस धर्म कार्य को श्रेष्ठ माना है। एक बहन ने उत्तम कार्य किया है। अभी तक ६ से ७ लाख रुपये जमा करायी हैं। जब आती है तब चेक ले लीजिये और यह भी कहती है कि किसी से कहना नहीं। अभी कितना काम बाकी है ? जब तक काम नहीं होगा तब तक देना है। बस धर्मवंशी परिवार मेरे ऊपर प्रसन्न हो ऐसा करना। इस तरह के कितने सेवाभावी भक्त है।

एक बैंक के निवृत श्री हेमेन्द्रभाई जिन्हें एक ही पुत्र है। जो सतत बिमार रहते हैं। आजिविका व्याजपर निर्भर है। प.पू. बड़े महाराजश्रीने मना कर दिया तो वे बड़े दुःखी हो गये। १०,००१ रुपये म्युझियम के लिये दिये। ऐसे भक्तों का कल्याण क्यों न हो ? महाराज उन्हें क्यों लेने न आवें ! हम भी इसमें से प्रेरणा लेकर अक्षरधाम के अधिकारी बने।

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

वरसाणी (ता. लखतर) गाँव में सत्संग सभा

मूली श्री राधाकृष्णदेव के वरसाणी गाँव में ता. २८-५-०८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया। अहमदाबाद से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सबसे पहले लींबडी गाँव में प.भ. ठाकरसीभाई गांडाभाई पटेल के वहाँ पधारे थे। तावी में भाईयों तथा बहनो के मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर प.भ. सजुभा वाघुभा राणा के बंगले पधारे थे। इस गाँव में हरिभक्तोने भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया था। प्रासंगिक सभा में शा. स्वामी नारायणप्रसाददासजी, स.गु. स्वामी बलदेवप्रसाददासजी, शा. छपैयाप्रसाददासजी (जोडीया महंत) शा. सत्यप्रकाशदासजी, शा. आत्मप्रकाशदासजी (सायला) शा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुर), लींबडी के महंत स्वामी बालस्वरुपदासजी, स्वामी ब्रह्मविहारीदासजी तथा पा. भरत भगतने सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का माहात्म्य श्री नरनारायणेव गादी की वफादारी तथा मूलीश्री राधाकृष्णदेव का पक्ष रखने हेतु आदि के बारे में द्रष्टांत सहित हरिभक्तों को समझाया।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद देते हुए कहा कि जब तक हीरे की परख न हो तब तक उसे सामान्य पथ्थर समझते है। जब एक हजार रुपये की नोट हो तो बाजार में पड़े पांच पैसेकी कदर कोई नहीं करता। उसी प्रकार जब एकबार भगवान की महिमा समझ में आ जाती तो सब कुछ मिथ्या लगता है। इस प्रकार महाराजश्री वरसाणी हरिभक्तों के उपर बहुत प्रसन्न हुए थे। सभा संचालन चराडवा के महंत शा. स्वामी हरिप्रकाशदासजीने किया था।

इस प्रसंग में शा. स्वामी नारायणप्रसाददासजी के मार्गदर्शन के अनुसार वी.पी. स्वामी (अम.) शा. आत्मप्रकाशदासजी (सायला) और जोडीया महंत शा. छपैयाप्रसाददासजी ने प्रेरणारुप सेवा प्रदान की थी। इस प्रसंग पर समस्त गाँव को तथा महेमानों को प्रसादरुपी भोजन करवाया गया।

विदेश सत्संग वृत्तान्त

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी (I.S.S.O.) ओस्ट्रेलीया

परम कृपालु श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा-आशीर्वाद से सीडनी मंदिर में हमारे हरिभक्तोने साथ मिलकर भजन कीर्तन कथा वार्ता करते हैं। मई महिने में नीचे अनुसार सभा हुई थी। ता. २७-४-०८ प.भ. व्रज मारु तथा श्री कृष्णकांत मारु ता. ४-५-०८ रविवार श्री श्रेया ठाकर तथा श्री अमितभाई क्षत्रिय सभी ने महिने के प्रथम रविवार को नंद संतो द्वारा रचित रास का आयोजन किया गया। हरिभक्तोने हर पूनम को अंदाजित १० किलो मीटर के विस्तार से हमारे मंदिर तक समूह पदयात्रा की योजना की थी। प.भ. निलेशभाई पटेल पदयात्रा सेवा की कामगीरी करते हैं। ता. १८-५-०८ को सभा हमारे उत्साही श्री नरनारायणदेव गादी के निष्ठावान प.भ. खीमजीभाई वाघजीयाणी की तरफ से रखी गयी थी।

ता. २५-५-०८ की सभा प.भ. जनक पटेल तथा ता. १-६-०८ की सत्संग सभा श्री मिथिल दिक्षित की तरफ से रखी गयी थी। ता. ८-६-०८ की सभा श्री वरुण महेन्द्रभाई अमीन के तरफ से थी।

- तेजश बी. पटेल

वोशिंग्टन (डी.सी. I.S.S.O. चेप्टर)

१८ मई की शाम को ३-०० से ७-३० तक सर्वनापार्क कम्युनिट होल में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। कथा, वार्ता, धून, भजन, कीर्तन तथा ठाकुरजी का भोग-आरती नित्य-नियम समूह में किया। इस सभा में २०० माइल दूर से हरिभक्त दर्शन का लाभ लेने अवश्य आते हैं। प्रत्येक सभा में मुमुक्षु की संख्या बढती जाती है। प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृति की प्रगति अच्छी हो रही है। *- कनुभाई पटेल*

कोलोनीया (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में शनिवार के विकेन्ड की सत्संग सभा में प.पू. बड़े गादीवालाश्री, पू. बिन्दुराजा, श्री सौम्यकुमार तथा श्री सुव्रतकुमार तथा पार्षद वनराज भगत उपस्थित रहे थे। उसके बाद महंत स्वामी सिध्धेश्वरदासने श्री निलकंठवर्णी के वनविचरण की कथा का सुंदर वर्णन किया। अंत में बहनो की सभा में गागराणी परिवार की बहनोने प.पू. बड़ी गादीवालाश्री का पूजन आरती करके आशीर्वाद प्रदान किये थे। कोलोनिया मंदिर की सत्संगी बहनो की तरफ से उषाबहन शाह ने प.पू. बड़े गादीवालाश्री का स्वागत पूजन किया था। उसके बाद क्रमशः पू. बिन्दुराजा तथा चि. सुव्रतकुमार तथा सौम्यकुमार का भी स्वागत किया गया था। धर्मकुल की अखंड सेवा में रहते पार्षद वनराज भगत का स्वागत किया मंदिर की तरफ से मुकुन्दभाई पटेल तथा रजनीभाई चोकसीने किया था।

प.भ. प्रेमचंदभाई के पुत्र की हार्ट में तकलीफ होने के कारण होस्पिटल में एडमीट किया गया था। उनके स्वास्थ्य की मंगलकामना हेतु स्वामिनारायण महामंत्र धून सभीने मिलकर की। वैशाख वद-११ अपरा एकादशी की सभा में महंत शा. स्वामी सिद्धेश्वरदासीजने एकादशी माहात्म्य की सुंदर कथा का पान करवाया था।

प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से सत्संग की प्रवृति अच्छी है

- प्रविणभाई शाह

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

धनवडा (धोलका)	:	श्री मुरली मनोहरदेव तथा धर्मकुल तथा सत्संग के प्रति अतुट श्रद्धावाले प.भ. चंपाबहन कानजीभाई ठक्कर ता. ४-६-०८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हो गये।
मेघाणीनगर	:	गं.स्व. रामुबहन लालजीभाई ठुमर ता. १०-६-०८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।
बापुपुरा (ता. माणसा)	:	प.भ. जीवणभाई चेलाभाई कुवेरभाई चौधरी ता. ९-६-०८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हो गये।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

॥ શ્રી સ્વામિનારાયણો વિજયતેતરામ્ ॥

જન્મદિન મહોત્સવ

શ્રી નરનારાયણદેવ ગાદીના ૮માં ભાવિ આચાર્ય
પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રીનો ૧૧મો જન્મોત્સવ



પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી

નિમંત્રણ

સર્વોપરિ સર્વાવતારી ઈષ્ટદેવ શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાને પોતાના સ્થાને પ્રસ્થાપિત કરેલ શ્રી નરનારાયણદેવ ગાદીના વર્તમાન ૭માં આચાર્ય પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય શ્રી ૧૦૦૮ કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના પુત્રરત્ન અને શ્રી નરનારાયણદેવ ગાદીના ભાવિ આચાર્ય પરમપૂજ્ય લાલજી મહારાજશ્રી ૧૦૮ શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીનો ૧૧મો પ્રાકટયોત્સવ અષાઢ વદ-૧૦ તા. ૨૮-૭-૨૦૦૮ને સોમવારના શુભ મંગળ દિવસે સર્વાવતારી શ્રી નરનારાયણદેવના શુભ સાન્નિધ્યમાં તથા પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા પૂ. મોટા મહારાજશ્રીની શુભ નિશ્રામાં અને પૂજ્યનીય સંત સમુદાય અને શ્રીહરિના ધર્મકુળ આશ્રિત હરિભક્તોની શુભ ઉપસ્થિતિમાં ખૂબજ ધામધૂમ અને ભવ્ય રીતે ઉજવવામાં આવશે. તો આવા શુભ મંગલ અવસરે સમસ્ત સત્સંગ સમાજને પધારવા અમારું ભાવભર્યું રૂડું આમંત્રણ છે.

જન્મોત્સવના યજમાન





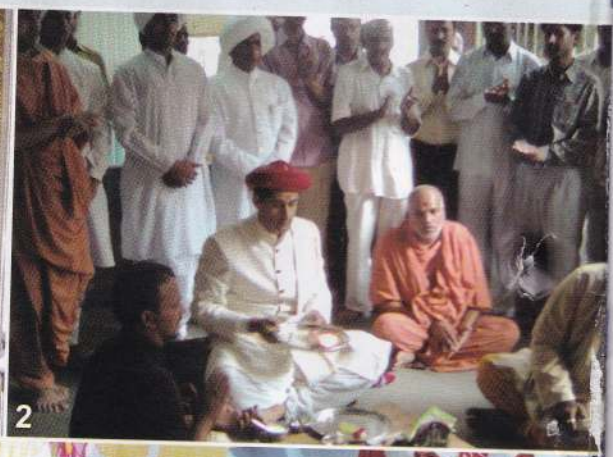
ચિ.હરિન્દ્ર,દિવ્યાની,ચાંદની,
હ.પિતાશ્રી અશોકભાઈ તથા
માતાજી જયોત્સનાબેન તથા દાદા નારણભાઈ તથા
દાદી હીરૂબેન-માંડવી (કચ્છ) હાલ લંડન

મહંત સ્વામી
નારાયણસ્વરૂપદાસ
ના શ્રીહરિસ્મૃતિ સહ
જય શ્રી સ્વામિનારાયણ.

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર,
કાલુપુર, અમદાવાદ.
અષાઢ વદ-૧૦ તા. ૨૮-૦૭-૦૮
સવારે : ૭-૩૦ કલાકે.

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08













१. जेष्ठ शुक्ल-१५ को सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव को केशर स्नान के बाद आरती उतारते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।

२. 'श्री स्वामिनारायण' महामंत्र लेखकी पूजन विधि करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।

३. वरसाणी (मूलीदेश ता. लखतर) गाँव के सत्संग सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।

४. प्रांतिज मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारते हुए यजमान परिवार और कथा सुनते हुए हरिभक्त ।

Ahd (079) 26580916, 9879066686